गंगा-पुस्तकमाला का सत्तानवेवाँ पुष्प

सौभाग्य-लाड़ला नेपोलियन

लक्ष्मणसिंह बी० ए०, एल्-एल्० बी०

सौभाग्य-लाड़ला नेपोलियन

संपादक

श्रीदुलारेलाल भार्गव

(सुधा संपादक)

गंगा-पुस्तकमाला का सत्तानबेवाँ पुष्प

सौभाग्य-लाड़ला नेपोलियन

लेखक

ठाकुर रुमणसिंह बी० ए०, एल्-एल्० बी०

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

प्रकाशक और मुद्रक

लखनऊ

प्रथमावृत्ति

सजिल्द १)] सं० १९८६ [सादी ॥)

प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

मुद्रक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

सौभाग्यलाड़ला नेपोलियन

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ
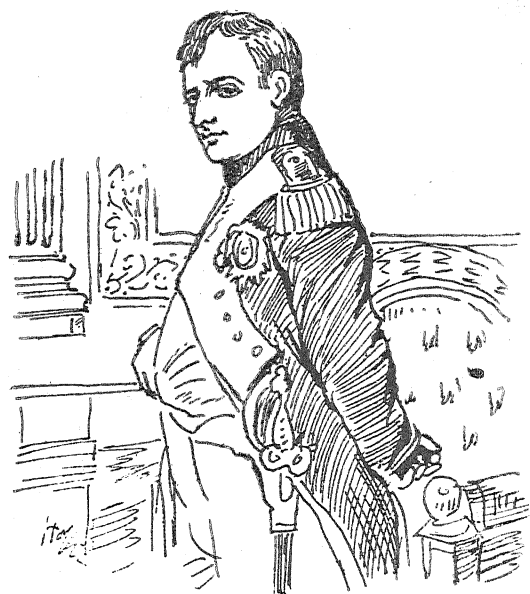
सौभाग्य-लाड़ला नेपोलियन

तारीख़ १२ मई सन् १७९६ ई०। स्थान, उत्तर-इटली में लोडी से मीलाँ को जानेवाले मार्ग पर टेवेज़ेनो नगर। समय तीसरा पहर। लोंबार्डी के मैदान पर सूर्य प्रखरता से चमक रहा है। ऐसा मालूम होता है, मानो वह आल्प्स पर्वत का आदर कर रहा हो और बामियों (चींटियों के घरों) को दया की दृष्टि से देख रहा हो। उसको इस बात का दुःख नहीं है कि गाँवों में गाय, बैल और सूअर वग़ैरह उसकी धूप ले रहे हैं और न उसको इस बात से ही कोई कष्ट है कि गिरजाघरों की शीतल छाया में उसका स्वागत नहीं होता। किंतु दो प्रकार के उपद्रवी कीड़ों से उसे अत्यंत घृणा मालूम होती है। वे कीड़े फ़रांसीसी और आस्ट्रियन सैनिक हैं। दो दिन पहले आस्ट्रियनों ने फ़रांसीसी सेना को लोडी के पासवाले सँकरे पुल से नदी पार करने से रोका था। परंतु फ़रांसीसियों ने अपने २७ वर्ष के, युद्ध-कलाभिज्ञ जनरल नेपोलियन बोना-पार्ट की आज्ञा से, तोपों के भयंकर वार के सहारे, बरसती हुई अग्नि में होकर उस पुल को पार किया था। उस समय वह जवान जनरल अपने हाथ से तोप चला रहा था। उसको तोप चलाने का शौक़ है। उसने फ्रांस के शाही ज़माने में तोप

चलाना सीखा था। वह कर्तव्य से हटने और तनख़्वाह बाँटने-वाले अफ़सर को अपने सफ़र-ख़र्च के बारे में धोखा देने तथा जैसा कि उसकी तस्वीरों में दिखाया गया है, तोप के धुएँ और गड़गड़ाहट से युद्ध को भव्य बनाने में पूर्णरूप से सिद्ध-हस्त हो गया है। तो भी उसकी दृष्टि मौलिक है और बारूद का आविष्कार होने के बाद सबसे पहले उसी ने इस बात का पता लगाया है कि तोप का गोला, यदि किसी मनुष्य को लगेगा, तो उसे जान से मार डालेगा। इस आश्चर्य-जनक आविष्कार के पूर्ण ज्ञान के साथ ही वह भू-प्रदेश की रचना और समय तथा दूरी का ठीक अंदाज़ लगाने का भी ऊँचे दर्जे का ज्ञान रखता है। उसमें कार्य करने की विलक्षण शक्ति है और सार्वजनिक कार्यों में उसको मनुष्य-स्वभाव की सच्ची परख है क्योंकि फ्रांस की राज्य-क्रांति में उसका अनुभव वह अच्छी तरह कर चुका है। उसकी कल्पना-शक्ति भ्रम-रहित है। वह धर्म, राजभक्ति, देशभक्ति अथवा किसी भी सामान्य आदर्श के विना ही बड़ा करतबी है। यह बात नहीं है कि वह इन आदर्शों के अनुसार काम करने के योग्य न हो। बरन् सच बात तो यह है कि उसने अपने बचपन में ही इन आदर्शों का श्राद्ध कर डाला था और अब काम पड़ने पर वह अपने स्वभाव-जन्य नाट्य-कौशल के द्वारा नाटक के नट, सूत्रधार तथा पात्रों के समान संसार को धोखा देने के लिये इन आदर्शों का बड़ा ही उत्तम नाट्य कर सकता है।

यह सब होते हुए भी वह लाड़ से बिगड़े हुए बालक के समान नहीं है। किंतु दरिद्रता और दुर्भाग्य की ठोकरों ने उसे आत्मा निर्भर होने के लिये विवश कर दिया है। अपनी दशा सुधारने के लिये वह धनिकों के सामने धृष्टतापूर्ण नम्रता का नाट्य करने में भी नहीं चूका। सफल लेखक बनने के लिये भी उसने अनेक असफल प्रयत्न किए हैं। मौक़े बे-मौके अपना मतलब गाँठने में भी वह बड़ा अपमानित हो चुका है और निम्न पदाधिकारी की दशा में उसकी अयोग्यता और बेईमानी के कारण उसे कई प्रकार की सज़ाएँ मिल चुकी हैं। फ्रांस की राज्य-क्रांति के बाद ही सब रईस विदेशों में जा बसे थे इस कारण टुटपुँजिया लेफ्टिनेंट की भी उस समय देश में बड़ी माँग थी, वह शाही ज़माने के अनुभवी जनरल के समान समझा जाने लगा था, इसीलिये वह अब तक सेना में मौजूद था, नहीं तो कभी का निरादर पूर्वक निकाल दिया गया होता। इन्हीं संकटमय अवस्थाओं ने उसे अपने पैरों पर खड़े होने की शिक्षा दी है, और यह सिखा दिया है कि उसकी हैसियत का मनुष्य जिस वस्तु को संसार से ज़बरदस्ती नहीं छीन सकता, वह वस्तु संसार उसे कभी नहीं देगा। ऐसी अवस्था में संसार से न लड़नेवाले मनुष्य कायर और मूर्ख हैं। नेपोलियन, राजनीतिक गंदगी पर निर्दयता के साथ आक्रमण करनेवाले की हैसियत से उपयोगी ही साबित हा रहा है। वास्तव में इँगलैंड में रहते हुए कभी-कभी यह ख़याल आ जाता है कि जूलियससीज़र और नेपो-

लियन द्वारा न जीते जाने के कारण इँगलैंड को कितना नुक़-सान हुआ है।

खैर, सन् १७६६ के मई महीने के तीसरे पहर वह युवा-वस्था में है। उसकी उम्र केवल २६ वर्ष की है। एक ओर तो, उस समय फ्रांस का शासन करनेवाले डायरेक्टरों को अपनी पत्नी द्वारा प्रसन्न करके और दूसरी ओर ऊपर ज़िक्र किए हुए रईसों के बाहर चले जाने तथा सड़कों, नदियों पहाड़ियों और घाटियों-सहित सारे भू-प्रदेश की रचना को अपनी हथेली की रेखाओं के समान जानने के कारण, पर अधिकतर मनुष्यों पर तोपें दाग़ने की सफलता में अपने नए विश्वास के कारण वह अभी हाल ही में जनरल बन गया है। अनुशासन की दृष्टि से उसकी सेना की अवस्था ऐसी है कि जब यह नाटक खेला गया, तो आजकल के कुछ लेखकों ने नेपोलियन के शाही वैभव से प्रभावित होने के कारण इस नाटक की सचाई पर विश्वास करने से भी इनकार किया। परंतु नेपोलियन अभी बादशाह नहीं बना है, अभी वह कारपोरल है और बहादुरी दिखाकर अपने सिपाहियों पर प्रभाव जमाने की कोशिश कर रहा है। अभी उसकी अवस्था ऐसी नहीं है कि वह पुराने फ़ौजी तरीक़े के मुताबिक़ केवल धमकी से ही सिपाहियों पर हुकूमत कर सके। फ्रांस की राज्य-क्रांति के न दब सकने का कारण यह था कि फ्रांस के राजा चार-चार साल तक सिपाहियों को तनख्वाह नहीं देते थे। राजघराने

को इस आदत के स्थान पर फ्रांस की राज्य-क्रांति ने जहाँ तक हो सका, यह आदत डाली कि सिपाहियों को लंबे-चौड़े वचन दिए जायँ और उनकी देश-भक्ति की सब तारीफ़ की जाय, लेकिन तनख़्वाह के नाम से एक पैसा भी न दिया जाय। इसलिये जब नेपोलियन अपनी सेना लेकर आल्प्स पर्वत पर पहुँचा, तो उसके पास न तो धन था और न सिपाहियों के लिये काफ़ी कपड़े ही। ऐसी अवस्था में सिपाही अनुशासन में रहना पसंद नहीं करते थे और ख़ासकर ऐसे अफ़सर के अनुशासन में, जो कि एक छोटे-से ओहदे से बढ़कर एकदम जनरल बना हो। यह अवस्था, जिसमें कोई आदर्शवादी सैनिक घबरा जाता, नेपोलियन को १००० तोपों के समान मूल्यवान् मालूम हुई। उसने अपने सिपाहियों से कहा—"तुममें देश-भक्ति और साहस है; किंतु तुम्हारे पास धन नहीं है, न कपड़े हैं, और न कुछ खाने को ही है। इटली में ये सब चीज़ें हैं और वह विजय भी है जो लूट को सिपाही का स्वाभाविक अधिकार माननेवाले सेनापति के नेतृत्व में किसी भी आज्ञाकारिणी सेना को प्राप्त हासकती है। वैसा सेनापति मैं हूँ। बहादुरो, बढ़े चलो" परिणाम अनुकूल ही हुआ। टीडी-दल के समान नेपोलियन के सिपाहियों ने इटली को जीत लिया। वे दिन-भर लड़ते हैं और रात-भर चलते हैं। वे इतने लंबे धावे मारते हैं, जो संभव नहीं मालूम होते और ऐसे स्थानों में पहुँच जाते हैं, जहाँ पहुँचने का किसी को विश्वास नहीं होता। पर ऐसा इसलिये नहीं होता कि हर सिपाही को

फ़ील्डमार्शल के समान जहाँ चाहे वहाँ चले जाने का अधिकार है, किंतु इसलिये कि वहाँ से वह दूसरे दिन कम-से-कम आधे दर्जन चाँदी के चम्मच ले आने की आशा करता है।

यहाँ यह जान लेना आवश्यक है कि फ़रांसीसी सेना इटालियनों पर आक्रमण करने के लिये नहीं आई है, वह तो उन्हें आस्टियनों से बचाने और प्रजा-सत्तात्मक शासन-प्रणाली प्रचलित करने को आई है; इसलिये यदि वह प्रसंग-वश उनको लूटती है, तो यही समझना चाहिए कि वह अपने मित्रों की वस्तुओं का बे-तकल्लुफ़ी के साथ व्यवहार करती है, जिसके लिये उन मित्रों को कृतज्ञ ही होना चाहिए, और यदि अकृतज्ञता उनके देश का परंपरागत गुण न हो, तो वे बहुत ही कृतज्ञ होंगे। जिन आस्ट्रियनों से फ़रांसीसी सेना युद्ध कर रही है, वे आदरणीय और बाज़ाप्ता सिपाही हैं, और पूर्ण-रूप से व्यवस्थित हैं। उनका कमांडर एक सज्जन पुरुष है, जो पुराने ढंग की युद्ध-कला का पूरा पंडित है, और उनका आला अफ़सर है। उसका नाम है बूलो। वह अपने देश की राजधानी में ही बैठे-बैठे शासकों की आज्ञाओं के अनुसार युद्ध की प्राचीन पद्धति का प्रयोग करता है, और उस नेपोलियन से बार-बार बुरी तरह हार खाता है जो युद्ध-कला की प्राचीन पद्धति और अपने देश की राजधानी में बैठे हुए शासकों की परवा न करके अपनी ही ज़िम्मेवरी पर सब कार्य करता है। कभी आस्ट्रियन सेना युद्ध में जीत भी जाती है, तो

उसे प्राचीन पद्धति के अनुसार चाय-पानी के लिये वहीं रुकना पड़ता है, चाहे इस रुकने के कारण वह प्राप्त की हुई विजय उनके हाथ से छिन ही क्यों न जाय और उसे पुनः प्राप्त करने के लिये फिर से लड़ना ही क्यों न पड़े, जैसा कि मारेंगो में हुआ था। इससे प्रकट है कि नेपोलियन के शत्रु आस्ट्रियन, राजनीति, प्राचीन युद्ध-पद्धति और राजधानी वीयना के रईसाना समाज-संगठन में बँधे हुऐ थे। इसलिये आश्चर्य-जनक वीरता दिखाए विना ही नेपोलियन उनको बार-बार हराता रहा। संसार तो आश्चर्य-जनक घटनाओं और वीरों को चाहता है; वह प्राचीन युद्ध-पद्धति अथवा वीयना के दरबार की ख़ूबियों को नहीं समझता। इसलिये वह नेपोलियन को बादशाह बनाने में लगा है, ताकि सौ वर्ष बाद लेखकों को नीचे लिखी हुई टेवेज़ेनो की छोटी-सी घटना पर विश्वास करना कठिन हो जाय।

टेवेज़ेनो में सबसे अच्छा मकान एक छोटी-सी सराय है, जो मीलाँ से लोडी को जानेवाली सड़क पर सबसे पहले पड़ती है। उसके आसपास अंगूर का छोटा-सा बाग़ है और उसका सबसे अच्छा कमरा बाग़ की तरफ़ बरामदे के समान खुला हुआ है। कुछ दिनों से विपत्ति-सूचक घंटे की आवाज़ों और फ़ौजी धावों के कारण शहर के साहसी बालक उत्तेजित हो रहे हैं और वे एकाएक छः बजे फ़रांसीसी सिपाहियों को देखकर जान गए हैं कि फ़रांसीसी कमांडर उस कमरे में ठहरा है। इसलिये उनका मन सामने की खिड़कियों के अंदर झाँकने की

इच्छा और सतरी के विपत्ति-जनक भय के बीच दुविधा में पड़ा हुआ है। यह संतरी जवान और सज्जन मालूम होता है। उसके मूँछें नहीं हैं। किंतु सारजंट ने उसके चेहरे को रोबीला बनाने के लिये जूते की पॉलिश से बड़ी-बड़ी मूँछें बना दी हैं। उसकी वर्दी, आराम या स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए परेड के लिये बनाई गई थी। इसलिए वह धूप के कारण पसीने से तर हो रहा है और उसकी मूँछ का रंग फैलकर ठोड़ी और गर्दन तक पहुँचा है और कहीं-कहीं गोल धब्बे पड़ गए हैं। उन धब्बों की बाहरी रेखाएँ कटकर खाड़ी और अंतरीप बन रहे हैं, जिससे वह संतरी सौ वर्ष बाद के इतिहासकार को नितांत हास्यास्पद मालूम होता है। परंतु उस समय के उन इटालियन बालकों को तो वह पिशाच के समान भयंकर मालूम हो रहा था। वे सोच रहे थे कि वह पहरा देते-देते जी ऊबने पर संगीन का नोक से किसी अकेले बालक को छेदकर और कच्चा खाकर अपना दिल बहलाएगा, तो भी एक उद्दंड बालिका, जिसमें सिपाही के साथ मेल-मुहब्बत करने की इच्छा जाग्रत् हो रही है, संतरी से दूरवाली खिड़की के भीतर झाँक ही लेती है। इतने में उस संतरी की आँख उठती है और ज़रा झन-कार होते ही वह भाग जाती है। उसने जो कुछ देखा, उसे वह कई बार देख चुकी है, पिछवाड़े का अंगूर का बाग़, बाग़ में रक्खा हुआ शराब बनाने का यंत्र और गाड़ी, पास ही दाहिनी ओर का दरवाज़ा जो कि सराय का प्रवेश-द्वार है,

उसके कुछ आगे सराय के मालिक का भंडार और भंडरिया जो इस समय पकानों से भरे हुए हैं, दूसरी ओर अँगीठी की जगह जिसके पास पलँग पड़ा है। वह दूसरा दरवाज़ा, जिसमें से बाग़ की ओर के कमरों के लिये रास्ता है और कमरे के बीच में रक्खा हुआ टेबुल जिसपर अंगूर, रोटी, रायता इत्यादि के ढेर रक्खे हैं और लाल शराब की एक बड़ी-सी बोतल भी है।

सराय का मालिक जोज़फ़ ग्रैंडी भी कोई नई चीज़ नहीं है। वह साँवला, आनंदी, प्रसन्नचित्त, कालेबालवाला, गोली के समान लंबे और गोल सिरवाला, बार-बार दाँत निकालनेवाला, छोटा-सा ४० वर्ष का आदमी है। स्वभावतः वह अच्छा मेज़-बान है और आज फ़रांसीसी कमांडर को मेहमान पाकर तो वह और भी ख़ास तौर से ख़ुश है; क्योंकि अब उसको सिपा-हियों का डर नहीं रहा। इसलिये उसने अपने सोने के बाले कान में पहन लिए हैं, अन्यथा उनको वह अपनी चाँदी की तश्तरियों के साथ उस मशीन के नीचे छिपा देता।

उस लड़की को यदि कोई नई वस्तु दिखाई देती है, तो वह नेपोलियन है, जो टेबुल के उस ओर सामने मुँह किए बैठा है। उसका हैट, तलवार और कोड़ा पलँग पर पड़े हैं। वह इस समय ज़ोरों से काम में भिड़ा है। पहला काम है भोजन, जिसकी सब चीज़ें एक साथ निगलकर दस मिनट में ख़तम कर देने की तरकीब उसने ईजाद की है (इसी आदत से उसका

पतन प्रारंभ होता है) दूसरा काम नक़शा देखना है । वह नक़शे को अपनी स्मृति से सुधार रहा है और कभी-कभी अपने मुँह से अंगूर का छिलका निकालकर और उसको अँगूठे से नक़शे पर दबाकर सेना के मोर्चों के निशान बना रहा है उसके सामने लिखने का सामान भी है, जो खाने की तश्तरियों और प्यालियों के बीच बिखरा पड़ा है । वह खाने और नक्शे में इतना मशग़ूल है कि उसके लंबे बाल कभी सिरके में और कभी खाने में सन जाते हैं ।

जोज़फ़—क्या सरकार ?

नेपोलियन—(नक़शे पर ध्यान जमोए किंतु आदत के मुताबिक़ बाएँ हाथ से खाते-खाते) बोलो मत । काम में हूँ ।

जोज़फ़—(पूर्ण प्रसन्नता से) सरकार, जो आज्ञा ।

नेपोलियन—थोड़ी लाल रोशनाई ।

जोज़फ़—अफ़सोस ! सरकार, बिलकुल नहीं है ।

नेपोलियन—(स्वाभाविक विनोद से) किसी को मारकर उसका ख़ून ला दो ।

जोज़फ़—(दाँत बिचकाकर)कोई भी तो नहीं है ; सिवा सरकार के घोड़े, संतरी, सराय में ठहरी हुई स्त्री और मेरी पत्नी के ।

नेपोलियन—अपनी पत्नी को मार डालो ।

जोज़फ़—ख़ुशी से, सरकार; पर दुर्भाग्य से मुझमें काफ़ी ताक़त नहीं है । वह उल्टा मुझे मार डालेगी ।

नेपोलियन—तो तुमसे भी काम अच्छी तरह चल जायगा

जोज़फ़—सरकार तो मेरा बहुत अधिक सम्मान कर रहे हैं। (शीशी की ओर हाथ बढ़ाते हुए) शायद शराब से सरकार का काम चल जाय।

नेपोलियन—(जल्दी से बोतल की रक्षा करते हुए और पूर्ण रूप से सावधान होकर) शराब! नहीं, यह तो फ़िज़ूल-ख़र्ची होगी। तुम सब एक-से होते फ़िज़ूल! फ़िज़ूल! फिज़ूल! (भोजन करने के काँटे से क़लम का काम लेते हुए नक़्शे पर शोख़ी से निशान बनाता है) चले जाओ।

(शराब ख़तम करके अपनी कुर्सी पीछे हटाता है और टाँगें लंबी करके पीछे टिककर अपने कपड़े ठीक करता है; परंतु अब भी उसकी भौहें चढ़ी हुई हैं और वह कुछ सोच रहा है)

जोज़फ़—(टेबुल साफ़ करते हुए और थाल में सब बर्तन रखकर भंडरिए की ओर ले जाते हुए) प्रत्येक मनुष्य अपने धंधे के अनुसार काम करता है सरकार! हम शराबवालों के पास बहुत-सी सस्ती शराब रहती है; हम उसके बह जाने की परवा नहीं करते। आपके समान बड़े सेनापतियों के पास बहुत-सा सस्ता ख़ून रहता है; आप उसके बहने की परवा नहीं करते। ठीक है न सरकार?

नेपोलियन—ख़ून में कुछ नहीं लगता; शराब में तो दाम लगते हैं। (उठकर अँगीठी के पास जाता है।)

जोज़फ़—सुनते हैं, आपको मनुष्य की जान के अतिरिक्त अन्य सब वस्तुओं की परवा है सरकार!

नेपोलियन—मित्र, मनुष्य की जान ही एक ऐसी चीज़ है, जो अपनी फ़िक्र ख़ुद कर लेती है। (आराम से पलँग पर लेट जाता है।)

जोज़फ—(नेपोलियन की सराहना करते हुए) ओह ! सरकार, हम लोग आपके सामने कितने अनाड़ी हैं ! आपकी सफलता का रहस्य यदि मुझे मालूम हो जाए······!

नेपोलियन—तो तुम इटली के बादशाह बन जाओ, क्यों ?

जोज़फ़—तब तो बड़ी आफ़त हो सरकार ! वह तो आप ही को मुबारक। भला, मैं बादशाह बन जाऊँ, तो मेरी इस सराय का क्या हो ! देखिए, इस सराय में आपके लिये इंतज़ाम करते और आपकी हाज़िरी बजाते हुए मेरी ओर देखने में सरकार को कितना आनंद होता होगा ! जब सरकार योरप के बादशाह बन जायँगे और मेरे लिये देश का इंतज़ाम करेंगे, तब आपकी ओर देखने में मुझे भी ठीक उसी तरह का आनंद होगा। (बात करते-करते टेबुल पर बिछा हुआ कपड़ा बिना नक़शा और दावात हटाए ही उठाता है और उसकी तह करने के लिये हाथों से कोने और मुँह से बीच का हिस्सा पकड़ता है)

नेपोलियन—योरप का बादशाह, एँ ? केवल योरप का ही क्यों ?

जोज़फ़—हाँ, निःसंदेह। दुनिया-भर का बादशाह, सरकार ! क्यों नहीं ? (वह कपड़े की तह करके लपेटता है और हर तह के साथ अपने वाक्यों पर ज़ोर देता जाता है) सब आदमी एक-से हैं (पहली

तह), सब देश एक-से हैं (दूसरी तह), सब युद्ध एक-से हैं (आख़िरी तह के वक़्त वह कपड़े को टेबल पर ज़ोर से पटकता है और फ़ुरती से लपेटते हुए अंत में कहता है), एक को जीतो, सबको जीतो। (कपड़ा ले जाकर भंडरिए को दराज़ में रखता है)

नेपोलियन—और सबके लिये शासन करो, सबके लिये लड़ो, और सबके मालिक बनने के बहाने सबके नौकर बनो, जोज़फ़।

जोज़फ़—(भंडरिए के पास से) सरकार!

नेपोलियन—मेरे सामने मेरे ही बारे में बातचीत मत करो।

जोज़फ़—(पलँग के पाँयते के पास आते हुए) क्षमा कीजिए सरकार आप दूसरे बड़े आदमियों से बिलकुल निराले हैं। वे इसी विषय को सबसे ज़्यादा पसंद करते हैं।

नेपोलियन—अच्छा तो उस विषय का चर्चा करो, जिसे वे दूसरे नंबर पर पसंद करते हैं, फिर वह चाहे जो हो।

जोज़फ़—(विना सकुचाए) ख़ुशी से सरकार। क्या कभी सरकार की नज़र ऊपर ठहरी हुई स्त्री पर पड़ी है?

(नेपोलियन तत्काल उठ बैठता है और जोज़फ़ की ओर उत्सुकता से देखता है)

नेपोलियन—उसकी उम्र क्या है?

जोज़फ़—ठीक उम्र है सरकार।

नेपोलियन—तुम्हारा क्या मतलब है, सत्रह या तीस ?

जोज़फ़—तीस, सरकार।

नेपोलियन—सुंदर है ?

जोज़फ़—मैं सरकार की आँखों से नहीं देख सकता, हर एक का निर्णय भिन्न रहता है। मेरी राय में वह सुंदर है। (शरारत से) उसके लिये यहाँ टेबल पर भोजन परोसूँ ?

नेपोलियन—(खड़े होते हुए रुखाई से) नहीं। मैं एक मनुष्य की प्रतीक्षा में हूँ। जब तक वह वापस न आ जाय, तब तक यहाँ कुछ न रक्खो। (वह अपनी घड़ी देखता है और अँगीठी तथा बाग़ के बीच इधर-उधर टहलने लगता है।)

जोज़फ़—(निश्चय के साथ) सरकार, मेरी बात मानिए। उसको पापी आस्ट्रियनों ने क़ैद कर लिया है। यदि वह स्वतंत्र होता, तो आपसे प्रतीक्षा कराने की उसकी हिम्मत न होती।

नेपोलियन—(बरामदे में घूमकर) जोज़फ़, यदि यह बात सच निकली तो मुझे इतना क्रोध आवेगा कि तुम्हें और तुम्हारे सारे परिवार, तथा उस स्त्री को भी, फाँसी लगाए विना मुझे संतोष नहीं होगा।

जोज़फ़—उस स्त्री के सिवा हम सब ख़ुशी से सरकार के ताबे में हैं, मैं उसके लिये कुछ नहीं कह सकता; लेकिन कोई स्त्री उस स्त्री के सिवा आपका प्रतीकार नहीं कर सकती, जनरल।

नेपोलियन—(खिन्न होकर, फिर टहलना शुरू करते हुए) हाँ! तुम्हें फाँसी नहीं दी जायगी। उस मनुष्य को फाँसी देने में कोई मज़ा नहीं जो फाँसी की आज्ञा का विरोध नहीं करता।

जोज़फ़—(सहानुभूति से) रत्ती-भर भी नहीं, सरकार। उसमें क्या मज़ा? (नेपोलियन फिर अपनी घड़ी की ओर देखता है, ज्ञात होता है वह चिंतित हो रहा है) अहा! हर कोई जान सकता है कि आप महा पुरुष हैं, जनरल। आप प्रतीक्षा करना जानते हैं। यदि अभी कोई कारपोरल, या सबलेफ़्टिनेंट होता, तो वह तीन मिनट के बाद क़समें खाता, ग़ुस्सा दिखाता, धमकियाँ देता, सारे घर को सिर पर उठाकर कान फोड़ डालता।

नेपोलियन—जोज़फ़, तुम्हारी चापलूसी असह्य है। जावो, बाहर जाकर बात करो। (नेपोलियन फिर टेबल के पास बैठता है और हथेलियों पर मुँह रखकर अपनी कोहनियाँ नक़्शे पर जमाकर उसकी ओर विचलित भाव से देखता है।)

जोज़फ़—ख़ुशी से, सरकार। कोई गड़बड़ नहीं होगी।

(वह थाल उठाता है और लौटने की तैयारी करता है)

नेपोलियन—जिस क्षण वह वापस आवे, उसी क्षण उसे मेरे पास भेजो।

जोज़फ़—फ़ौरन्, सरकार।

(सराय के किसी दूसरे हिस्से से आवाज़ आती है)

"जो-ज़े-फ़्"—(आवाज़ बड़ी सुंदर है और उसके यह अंतिम अक्षर उत्तरोत्तर ऊँचे स्वर में कहे गए हैं)

नेपोलियन—(चकित होकर) कौन है यह ? यह कौन है ?

जोज़फ़—(थाल की कोर मेज़ पर टेककर और बड़े विश्वस्त भाव से नेपोलियन की ओर झुकते हुए) वही स्त्री है, सरकार।

नेपोलियन—(लापरवाही से) अच्छा ! कौन स्त्री ? किसकी स्त्री ?

जोज़फ़—वही विचित्र स्त्री सरकार।

नेपोलियन—कौन विचित्र स्त्री, भाई ?

जोज़फ़—(कंधे हिलाते हुए) कौन जाने ? पर वह गोल्डन ईगल सराय की किराए की गाड़ी में आपसे आधा घंटा पहले ही यहाँ पहुँची है। बिलकुल अकेली, सरकार। कोई नौकर नहीं। उसके पास एक कपड़ों का बेग और एक ट्रंक है, बस। गाड़ीवान कहता था कि उसने एक घोड़ा—रिसाले का घोड़ा, फ़ौजी साज के साथ—गोल्डन ईगल पर छोड़ा है।

नेपोलियन—रिसाले के घोड़े के साथ स्त्री ! यह विचित्र बात है।

स्त्री की आवाज़—(उतरते हुए स्वर में डाँट के साथ) जोज़फ़ !

नेपोलियन—(सुनने के लिये उठते हुए) यह तो एक बड़ा ही चित्ताकर्षक स्वर है।

जोज़फ़—वह स्त्री भी चित्ताकर्षक है, सरकार। (ज़ोर से) आता हूँ, आता हूँ। (वह भीतर दरवाज़े की ओर जाता है।)

नेपोलियन—(कंधे पर ज़ोर से हाथ रखकर उसे रोकते हुए) ठहरो। उसे आने दो।

आवाज़—(अधीरता से) जोज़फ़ !

जोज़फ़—(विनीत भाव से) मुझे जाने दीजिए, सरकार। सरायवाले की है सियत से मेरा धर्म है कि पुकार होते ही पहुँचूँ। आप सिपाही हैं, अतएव तत्काल आज्ञा पालने के धर्म को जानते हैं। इसीलिये आपसे प्रार्थना करता हूँ कि सरकार मुझे जाने दीजिए।

एक मनुष्य की आवाज़—(बाहर, सराय के दरवाज़े पर, चिल्लाते हुए) यहाँ कोई है ? ऐ सरायवाला ! कहाँ है ? (कोई कोड़े के डंडे से रास्ते में रक्खी हुई बेंच को ज़ोर से खटखटाता है)

नेपोलियन—(एकाएक फिर कमांडिंग अफ़सर का भाव धारण करके और जोज़फ़ को धक्का देकर) वह आ गया आख़िर को। (भीतर के दरवाज़े की ओर इशारा करते हुए) जाओ, अपना काम सँभालो। वह स्त्री तुम्हें बुला रही है। (नेपोलियन अँगीठी के पास जाता है और उसकी ओर पीठ करके फ़ौजी शान से खड़ा होता है)

जोज़फ़—(अपना थाल उठाते हुए रुकती हुई साँस से) जाता हूँ सरकार। (भीतर के दरवाज़े से शीघ्रतापूर्वक बाहर निकल जाता है)

मनुष्य की आवाज़—(अधीरता से) क्या भीतर सब लोग गए ? (अँगीठी के सामने का दरवाज़ा किसी की ज़ोर की ठोकर से खुल जाता है और एक धूलि-धूसरित सब-लेफ़्टिनेंट अंदर धँस आता है। वह २४ वर्ष का होगा, उसका रंग उच्चवर्ग के मनुष्य के

समान गोरा, स्निग्ध और स्वच्छ है, इसलिये उसमें वह तद्वर्ग सुलभ आत्मविश्वास है, जिसे फ्रांस की राज्य-क्रांति ज़रा भी नहीं हिला सकी। उसका ओंठ मोटा तथा मूर्खता-दर्शक है, आँख विश्वासी तथा उत्सुक है, नाक हठीली है, और आवाज़ भारी तथा विश्वास-पूर्ण है। वह युवक भाव-रहित, आदर-रहित, कल्पना-रहित और बुद्धि-रहित है। उस पर नेपोलियन या किसी अन्य के ही रौब का ज़रा भी असर होने की आशा नहीं। वह महा अहम्मन्य और जहाँ देवता पैर रखने में डरें वहाँ कूद पड़नेवाला है। उसमें प्रबल सजीवता है जो उसे हर मामले में धँसा देती है। इस समय वह चिढ़ के मारे उबल रहा है। मामूली तौर से देखनेवाला कह देगा कि सराय के नौकर फ़ौरन् उसकी ख़िदमत में नहीं हाज़िर हुए, इसलिये वह चिढ़ रहा है। परंतु ज़रा बारीकी से देखनेवाला उसके क्रोध की नैतिक गहराई ताड़ लेगा और जान जायगा कि उसे कोई स्थायी तथा भारी शिकायत है। नेपोलियन को देखकर वह सहसा रुक जाता है और प्रणाम करता है; किंतु उसके व्यवहार से कारेंगो, ऑस्टर लिट्ज़, वाटरलू, सेंट हेलेना और डेलेराक के प्रसिद्ध व्यक्ति नेपोलियन की शान और महत्ता के लिये—वर्तमान विद्वानों की सम्मति में—उचित और उपयुक्त सम्मान नहीं प्रकट होता)

नेपोलियन—(तेज़ी से) अच्छा महाशय, आप आख़िर को आ ही पहुँचे। आपने सूचना दी थी कि मैं यहाँ ६ बजे पहुँचूँ, और आप पेरिस से मेरी डाक और काग़ज़ात लाकर यहाँ पर मेरा इंतज़ार करते हुए मुझे मिलेंगे। इस समय ८ बजने में

२० मिनिट हैं। आपको पक्का सवार समझकर रिसाले के सबसे तेज़ घोड़े पर इस काम के लिये भेजा गया था। आप १०० मिनिट देरी से आए और पैदल। आपका घोड़ा कहाँ है ?

लेफ़्टिनेंट—(सचिंत भाव से अपने दस्ताने खींचते हुए और उनको अपनी टोपी तथा कोड़े के साथ टेबल पर पटकते हुए) वास्तव में कहाँ है यही तो मैं भी जानना चाहता हूँ, जनरल। (गद्गद होकर) आप नहीं जानते मैं उस घोड़े को कितना प्यार करता था ?

नेपोलियन—(क्रोधयुक्त कटाक्ष से) बेशक ! (सहसा शांत होकर) वे चिट्ठियाँ और काग़ज़ात कहाँ हैं ?

लेफ़्टिनेंट—(चिंतित होने के बजाय किसी बड़ी ख़बर सुनाने की प्रसन्नता के-से महत्त्व के साथ) मैं नहीं जानता।

नेपोलियन—(अपने कानों पर अविश्वास करके) आप नहीं जानते ?

लेफ़्टिनेंट—आपके ही समान मैं भी नहीं जानता, जनरल। अब मैं ख़याल करता हूँ कि मुझे सज़ा दी जायगी। अच्छा, मुझे सज़ा की परवाह नहीं। (गंभीर निश्चय के साथ) मैं आपसे कहता हूँ जनरल, यदि मैं उस भोली सूरत के युवक को पकड़ पाऊँ, तो मैं उसकी सारी सुंदरता बिगाड़ दूँ। दुबला, पतला, छोटा-सा झुटैला ! मैं उसकी फ़ज़ीहत कर दूँगा। मैं—

नेपोलियन—(अँगीठी से टेबल की ओर बढ़ते हुए) कौन

भोली सूरत का युवक? ज़रा सँभलकर खड़े होइए जनाब, और ठीक-ठीक अपनी कैफ़ियत दीजिए।

लेफ़्टिनेंट—(टेबल की दूसरी ओर सामने खड़े हुए और अपने हाथों के बल उस पर झुके हुए) ओह! मैं बिलकुल सँभला हुआ हूँ जनरल। अपनी कैफ़ियत देने के लिये बिलकुल तैयार हूँ। मैं अदालत को अच्छी तरह समझा दूँगा कि क़सूर मेरा नहीं था। मेरे स्वभाव की अच्छाई का अनुचित लाभ उठाया गया है और मुझे उसकी शर्म नहीं है। किंतु जनरल, आपका अपने कमांडिंग अफ़सर की हैसियत से पूर्ण आदर करते हुए मैं फिर कहता हूँ कि उस शैतान के बच्चे को अगर देख पाऊँ तो, मैं—

नेपोलियन—(क्रुद्ध होकर) यह तो तुमने पहले भी कहा था।

लेफ़्टिनेंट—(सीधे खड़े होते हुए) मैं फिर कहता हूँ। ज़रा ठहरिए, मैं उसे पकड़ तो पाऊँ। ज़रा ठहरिए, बस। (वह दृढ निश्चय के साथ अपने पंजे जकड़ता है, उसकी साँस ज़ोर-ज़ोर से चलने लगती है और वह अपना ओंठ चबाता है)

नेपोलियन—मैं आपकी कैफ़ियत के इंतज़ार में हूँ जनाब।

लेफ़्टिनेंट—(विश्वास के साथ) जनरल, मुझ पर जो कुछ गुज़रा है उसे आप सुनेंगे, तो आपका यह स्वर बदल जायगा।

नेपोलियन—आपको कुछ नहीं हुआ है जनाब। आप जीते-जागते हैं और घायल नहीं हुए हैं। आपके ज़िम्मे जो काग़ज़ात दिए गए थे वे कहाँ हैं?

लेफ़्टिनेंट—मुझे कुछ नहीं हुआ ! कुछ नहीं। ओ हो ! (नेपोलियन को अपने समाचार से आश्चर्य-चकित कर देने की इच्छा से) उसने मेरे साथ अनंत बंधुता की क़सम खाई। क्या यह कुछ नहीं था ? उसने कहा कि मेरी आँखें देखकर उसे अपनी बहन की आँखों की याद आ जाती है, यह कुछ नहीं था ? मेरी एंजेलिका के वियोग की कहानी सुनकर वह रो दिया, सचमुच रोया। यह कुछ नहीं था ? उसने ख़ुद रोटी और अंगूर ही खाए, लेकिन मेरे लिये शराब की दोनों बोतलों की क़ीमत उसने अपने पास से दी। शायद इसे भी आप कुछ नहीं कहेंगे ! उसने मुझे अपने पिस्तौल, अपना घोड़ा और अपने काग़ज़ात—अत्यंत महत्त्वपूर्ण काग़ज़ात—दिए और मुझे उन सबको ले जाने दिया (यह देखकर कि भाषण के प्रभाव से नेपोलियन बिलकुल स्थगित हो गया है, शान से) यह कुछ नहीं था ?

नेपोलियन—(आश्चर्य से हत-बल होकर) उसने यह क्यों किया ?

लेफ़्टिनेंट—(जैसे कारण स्पष्ट है) मेरे प्रति अपना विश्वास दिखाने के लिये। (क्रोध से नेपोलियन का जबड़ा बिलकुल गिर नहीं पड़ता; किंतु ऐसा लगता है जैसे उसके जोड़ निर्बल हो गए हों। लेफ़्टिनेंट सच्चे रोष से कहता है) और मैंने अपनी विश्वास-पात्रता दिखाई। मैं ईमानदारी के साथ उन सब चीज़ों को वापस ले आया। परंतु क्या आप विश्वास करेंगे ? जब मैंने उसे अपने पिस्तौल, अपना घोड़ा और अपने काग़ज़ात—

नेपोलियन—(क्रुद्ध होकर) तुमने यह क्यों किया ?

लेफ्टिनेंट—क्यों, उसके प्रति अपना विश्वास प्रकट करने के लिये। और उसने धोखा दिया ! मेरी अच्छाई का दुरुपयोग किया ! फिर वापस नहीं आया ! चोर ! दग़ाबाज़ ! हृदयहीन ! हृदयहीन ! धोखेबाज़ ! बदमाश ! मेरे ख़याल में इसे भी आप कुछ नहीं कहेंगे ? पर देखिए जनरल, (फिर ज़ोर देने के लिये हाथों के बल टेबल पर झुककर) आप चाहें, तो आस्ट्रियनों का यह अन्याय सह लें; किंतु अपने बारे में मैं कहता हूँ कि यदि मैं उसे पकड़ पाऊँ।

नेपोलियन—(घृणा से पीछे घूमकर और उत्तेजित होकर इधर-उधर टहलना शुरू करते हुए) हाँ, यह तो आप पहले भी अनेक बार कह चुके हैं।

लेफ्टिनेंट—(उत्तेजित होकर) अनेक बार। मैं उसे पचास बार कहूँगा, और यही नहीं, मैं उसे करके छोड़ूँगा। आप देखेंगे जनरल, मैं उसके प्रति अपना विश्वास प्रकट करूँगा, मैं ऐसा ही करूँगा। मैं—

नेपोलियन—हाँ-हाँ, जनाब, निःसंदेह आप करेंगे। वह किस तरह का आदमी था ?

लेफ्टिनेंट—मैं तो सोचता हूँ कि उसके व्यवहार से आप जान सकते हैं कि वह किस तरह का आदमी था।

नेपोलियन—हुश ! वह किसके समान था ?

लेफ्टिनेंट—समान ! वह किसके समान, अजी उसे आप

देख लेते तो आपको मालूम हो जाता कि वह किसके समान था। यदि मैं उसे पकड़ पाऊँ तो ५ मिनिट बाद वह वैसा नहीं रहेगा, क्योंकि मैं आपसे कहता हूँ कि अगर कभी—

नेपोलियन—(सरायवाले को तेज़ी से पुकारते हुए) जोज़फ़! (बिलकुल अधीर होकर लेफ़्टिनेंट से) यदि हो सके, तो जनाब अब अपनी ज़बान बंद करें।

लेफ़्टिनेंट—मैं आपको चेतावनी देता हूँ कि यह दोष मेरे सिर मढ़ने का प्रयत्न करने में कोई लाभ नहीं। (अफ़सोस करते हुए) मैं कैसे जान सकता था कि वह किस प्रकार का आदमी था? (वह भंडरिया और बाहर के दरवाज़े के बीच से कुर्सी उठाता है और उसको टेबल के पास रखकर उस पर बैठ जाता है) यदि आपको मालूम हो कि मैं कितना भूखा और थका हूँ, तो आपको ज़रा दया आवे।

जोज़फ़—(वापस आते हुए) क्या है, सरकार?

नेपोलियन—(अपने क्रोध को दबाने का प्रयत्न करते हुए) ले जाओ इस अफ़सर को। इसे भोजन कराओ और यदि आवश्यकता हो, तो इसे बिस्तर पर सुला दो। जब इसका मन ठिकाने आ जावे तब इससे पूछो कि इसे क्या हुआ था और आकर मुझे ख़बर दो। (लेफ़्टिनेंट से) आप अपने को गिर-फ़्तार समझिए जनाब।

लेफ़्टिनेंट—(रूखी कड़ाई से) मैं इसके लिय तैयार हूँ। सज्जन ही सज्जन को पहचानता है। (अपनी तलवार टेबल

पर पटक देता है । जोज़फ़ उसे उठाता है और नम्रता-पूर्वक नेपोलियन को देता है । नेपोलियन उसको ज़ोर से पलँग पर फेंक देता है)

जोज़फ़—(सहानुभूति-पूर्ण चिंता से) क्या आप पर आस्ट्रियनों ने हमला किया, लेफ़्टिनेंट ? अरे रे !

लेफ़्टिनेंट—(तुच्छता प्रदर्शित करते हुए) हमला ! मैं उसकी कमर को अपनी चुटकी से तोड़ सकता था । अभी नहीं तोड़ सकता हूँ । तबियत होती है, अभी तोड़ दूँ । नहीं, उसने मेरे स्वभाव की अच्छाई का बेजा फ़ायदा उठाया है । इसे मैं क्षमा नहीं कर सकता । उसने कहा उसे आज तक ऐसा कोई आदमी नहीं मिला, जिसे वह मेरे समान चाहता हो । मेरी गर्दन पर एक मच्छर ने काट लिया, तो उसने अपना रूमाल मेरी गर्दन पर लपेट दिया । देखो ! (वह अपनी गर्दन से रूमाल खींचकर निकालता है । जोज़फ़ उसे लेकर उसकी जाँच करता है)

जोज़फ़—(नेपोलियन से) स्त्री का रूमाल है सरकार । (उसे सूँघता है) सुगं ः ।

नेपोलियन—ऐं ! (उसे लेता है और ध्यान से देखकर) हाँ (उसे सूँघता है) हाँ ! (रूमाल की ओर देखते हुए कमरे में विचार करता हुआ टहलता है, और अंत में उस रूमाल को अपने कोट पर सीने से लगा लेता है)

लेफ़्टिनेंट—ख़ैर ! यह रूमाल उसके लिये ठीक ही था । जब उसने मेरी गर्दन छुई, तो उसके नम्र और प्रेम-पूर्ण व्यव-

हार से मैं जान गया था कि उसके हाथ स्त्री के समान हैं नीच, नामर्द, कुत्ता। (अपनी आवाज़ गहरी कँपकँपी के साथ गिराते हुए) परंतु मेरे शब्दों का ख़्याल रखिए जनरल। यदि कभी—

उस स्त्री की आवाज़—(पहले के समान बाहर की ओर) जोज़फ़ !

लेफ़्टिनेंट—(स्तंभित होकर) यह क्या है ?

जोज़फ़—ऊपर एक स्त्री है, लेफ़्टिनेंट साहब, वह मुझे बुला रही है।

लेफ़्टिनेंट—स्त्री।

आवाज़—जोज़फ़, आप कहाँ हैं ?

लेफ़्टिनेंट—(क्रूरता से) मुझे वह तलवार दो। (पलँग के पास जल्दी से जाता और तलवार उठाकर उसे खींचता है)

जोज़फ़—(आगे बढ़कर और उसका दाहना हाथ पकड़कर) आप क्या सोच रहे हैं लेफ़्टिनेंट ? वह स्त्री है, आपको सुनाई नहीं देता कि वह स्त्री की आवाज़ है ?

लेफ़्टिनेंट—मैं कहता हूँ यह उस आदमी की आवाज़ है। मुझे जाने दो। (वह भीतर के द्वार के दरवाज़े की ओर भागता है। उसी समय दरवाज़ा खुलता है और वह विचित्र स्त्री भीतर क़दम रखती है। वह अत्यंत आकर्षक है, उसका क़द लंबा और रूप असाधारण है। उसका मुख-मंडल सुंदर, बुद्धि-पूर्ण, तर्क-पूर्ण और प्रश्न-पूर्ण है; उसकी भौंहों में निरीक्षण, नाक में भावुकता और ठोढ़ी में स्वभाव की दृढ़ता है; उसके सब अवयव तेजपूर्ण सुसंस्कृत और स्वाभा-

विक सुंदर है। वह अत्यंत सुकुमारी है, किंतु अबला किसी प्रकार भी नहीं। उसका शरीर मृदुल, लचीला किंतु बलवान् है। उसके हाथ और पैर, गर्दन और कंधे, केवल निर्बल खिलौने नहीं हैं, किंतु उसके शरीर के अनुसार पूर्णाकार हैं। वह नेपोलियन तथा उस सरायवाले से ऊँची मालूम होती है। उस लेफ़्टिनेंट के मुक़ाबले में भी किसी प्रकार कम नहीं मालूम होती। केवल उसका लावण्य और चमकीला सौंदर्य उसकी आकृति और बल को छिपा लेता है। मालूम होता है, वह प्रवास में अपने पुराने तर्ज़ के कपड़ों का उपयोग करती है। वह बहुत-सी झालरोंवाला जाकेट नहीं पहने है और न ग्रीस की भड़कीली छींट। वह कोई ऐसी चीज़ नहीं पहने है, जिससे कोई राजकुमारी न पहनती उसकी पोशाक फूलदार रेशम की है, जिसमें कमर के पास एक पट्टी लगी है, जो नीचे तक लटकी है। उसकी गर्दन नीचे तक खुली हुई है। उसका रंग गोरा, बाल सुनहले और आँखें भूरी हैं। सुंदर और उच्च कुल की महिलाओं का सब स्थानों में आदर होने के कारण उनमें जो आत्म-सम्मान का भाव उत्पन्न हो जाता है, उस भाव के साथ वह भीतर आती है। सरायवाला, जो स्वभावतः शीलवान् है, मन-ही-मन उसकी सराहना करता है। नेपोलियन, जिस पर सबसे प्रथम उसकी आँख पड़ती है, तत्क्षण सहम-सा जाता है। उसका रंग सुर्ख़ हो जाता है, उसमें कठोरता आ जाती है और उसकी स्वच्छंदता रुक जाती है। वह इस बात को तत्काल ताड़ जाती है, और तंग न करने की ग़रज़ से, शिष्टता के नियमों के अनुसार, वह दूसरे सज्जन को अपने दृष्टिपात से आदर

देने के लिये मुड़ती है। वह उसके कपड़ों की ओर इस तरह घूर रहा है मानो किसी कपट-जाल के नमूने की ओर देख रहा हो, और जिसके मन में अनिर्वचनीय भाव उठ रहे हों। उसकी ओर देखते ही वह बिलकुल ही पीली पड़ जाती है। उसका भाव स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाता है, मानो किसी भयंकर ग़लती ने, जिसकी उसे आशा नहीं थी, एकदम प्रकट होकर उसकी शांति, सुरक्षितता और विजय के संबंध में उसे एकाएक भयभीत कर दिया हो। किंतु दूसरे ही क्षण उसका चेहरा सुर्ख़ हो जाता है। प्रत्येक मनुष्य देख सकता है कि इस समय उसका सारा शरीर लज्जावनत हो रहा है। क्रोधांध लेफ़्टिनेंट की स्थूल दृष्टि भी इस लालिमा को देख लेती है। एकाएक सामना हो जाने के कारण, पूर्वकृत कपट-व्यापार की स्मृति होते ही मुख पर दौड़ जानेवाली इस लाली को अपराध की स्वीकृति का चिह्न समझकर वह बदला लेने के लिये, विजयोल्लास में ज़ोर से चीख़ उठता है और उसके लज्जारक्त कपोलों की ओर इशारा करता है। उस स्त्री की कलाई पकड़कर वह उसे कमरे के अंदर खींच लेता और दरवाज़ा बंद करने के बाद उससे पीठ सटाकर खड़ा हो जाता है।)

लेफ़्टिनेंट—अब तो बच्चा, मैंने तुम्हें पकड़ लिया। तुमने यह भेष बदला है, क्यों? (ज़ोर से गरजके) यह साड़ी उतारो।

जोज़फ़—(विरोध करते हुए) ओ लेफ़्टिनेंट साहब!

स्त्री—(भयभीत होकर, किंतु लेफ़्टिनेंट ने उसके शरीर को हाथ लगाने की हिम्मत की, इससे अत्यंत क्रुद्ध होकर) सज्जनो, मैं आपसे

प्रार्थना करती हूँ। जोज़फ़। (मुड़ती है मानो जोज़फ़ के पास दौड़ जायगी)

लेफ़्टिनेंट—(हाथ में तलवार ले बीच में आड़े आकर) नहीं, तुम नहीं जा सकतीं।

स्त्री—(नेपोलियन की शरण लेते हुए) महाशय, आप अफ़सर जनरल हैं। आप मेरी रक्षा करेंगे या नहीं ?

लेफ़्टिनेंट—इसकी न सुनिए जनरल। इस आदमी से तो मुझे ही निबटने दीजिए।

नेपोलियन—इस आदमी से ? कौन आदमी जनाब ? आप इस स्त्री के साथ इस प्रकार बर्ताव क्यों करते हैं ?

लेफ़्टिनेंट—स्त्री ! यह आदमी है। वही आदमी जिसका मैंने विश्वास किया था। (धमकी के साथ आगे बढ़ते हुए) यहाँ तुम—

स्त्री—(नेपोलियन के पीछे दौड़कर जाती हुई और नेपोलियन ने सहसा उसकी रक्षा के लिये जो हाथ बढ़ा[illegible] था, उससे व्याकुलतापूर्वक चिपटती हुई) ओफ़् ! धन्यवाद जनरल। इसे दूर कीजिए।

नेपोलियन—जनाब, यह दर-असल स्त्री है। (स्त्री एकाएक नेपोलियन का हाथ छोड़ देती है) और आप गिरफ़्तार हैं। अपनी तलवार फ़ौरन् रख दीजिए जनाब।

लेफ़्टिनेंट—जनरल, मैं आपसे कहता हूँ, यह आस्ट्रियन जासूस है। इसने आज तीसरे पहर अपने को जनरल मसीना

का मातहत अफ़सर बताकर मुझे धोखा दिया; और अब अपने को स्त्री बताकर आपको धोखा दे रहा है। मैं अपनी आँखों पर भरोसा करूँ या नहीं ?

स्त्री—जनरल, वह मेरा भाई होगा। वह जनरल मसीना का मातहत अफ़सर है। वह बिलकुल मेरे समान है।

लेफ़्टिनेंट—(शंकित मन से) क्या तुम्हारा मतलब यह है कि तुम अपने भाई नहीं हो, किंतु अपनी बहन हो—वह बहन जो मेरे समान थी—जिसकी आँखें मेरे समान सुंदर और नीली थीं ? झूठ बात। तुम्हारी आँखें मेरे समान नहीं हैं, वे ठीक तुम्हारे ही समान हैं। कितना कपट !

नेपोलियन—लेफ़्टिनेंट, तुम मेरा आज्ञा मानो और इस कमरे के बाहर चले जाओ। क्योंकि अब तुम्हें विश्वास हो गया है कि यह आदमा नहीं है ?

लेफ़्टिनेंट—मैं भी सोचता हूँ कि यह आदमो नहीं है। कोई भी आदमी मेरे विश्वा—

नेपोलियन—(सहनशीलता त्याग कर) काफ़ी हो गया महाशय, काफ़ी। आप कमरे के बाहर जायँगे या नहीं ? मैं आपको आज्ञा देता हूँ बाहर जाइए।

स्त्री—कृपा कर इनके बजाय मुझे ही जाने दीजिए।

नेपोलियन—(रुखाई से) क्षमा कीजिए, महाशया। आपके भाई के प्रति पूर्ण आदर रखते हुए भी, मैं अभी तक नहीं समझ सका हूँ कि जनरल मसीना के मातहत अफ़सर को मेरे पत्रों

की क्या आवश्यकता थी। मुझे आपसे कुछ बातें पूछनी हैं।

जाज़फ़—(विवेक से) आओ, लेफ़्टिनेंट। (दरवाज़ा खोलता है)

लेफ़्टिनेंट—मैं जाता हूँ। जनरल, मेरी चेतावनी का ख़याल रखिएगा, अपने भलमंसाहत के कारण कहीं फँस न जाइएगा। (स्त्री से) महाशया, मैं क्षमा माँगता हूँ। मैंने सोचा था कि आप वही व्यक्ति हैं। पर आप स्त्री ही हैं, मुझे धोखा हुआ।

स्त्री—(मधुरता से) इसमें आपका दोष नहीं था लेफ़्टिनेंट साहब। मुझे इस बात की ख़ुशी है कि अब आप मुझसे नाराज़ नहीं हैं (वह अपना हाथ आगे बढ़ाता है)

लेफ़्टिनेंट—(रसिक की तरह चूमने के लिये झुकते हुए) ओ महाशया ! ज़रा भी नहीं। (अपने आपको रोकते हुए और उसकी ओर देखते हुए) आपका हाथ तो आपके भाई का-सा है और उसमें उसी प्रकार की अँगूठी भी।

स्त्री—(मधुरता से) हम दोनों युगल हैं।

लेफ़्टिनेंट—तभी तो (हाथ चूमता है) हज़ार बार क्षमा माँगता हूँ। उन काग़ज़ात के बारे में मुझे ज़रा भी चिंता नहीं। उनका संबंध जनरल साहब से है, मुझसे नहीं। मुझे चिंता है, तो इस बात की कि मेरी भलमंसाहत के कारण मेरे विश्वास का दुरुपयोग किया गया है। (अपनी टोपी, दस्ताने और कोड़ा टेबल पर से उठाकर जाते हुए) जनरल साहब, मैं उम्मेद करता

हूँ, आपको छोड़कर इस प्रकार चले जाने के लिये आप मुझे क्षमा करेंगे। मुझे विश्वास है, आपको बहुत अफ़सोस हो रहा होगा। (इस तरह बातचीत करके वह कमरे के बाहर चला जाता है। जोज़फ़ उसके पीछे-पीछे जाता और दरवाज़ा बंद करता है)

नेपोलियन—(उसकी ओर गहरे क्रोध से देखते हुए) मूर्ख !
(वह विचित्र स्त्री सहानुभूति के साथ मुसकराती है। नेपोलियन टेबल और अँगीठा के बीच में भौंहें चढ़ाए हुए आता है। अब उस स्त्री के साथ अकेले रह जाने के कारण उसका वह भोंडापन दूर हो जाता है)

स्त्री—आपने मेरी जो रक्षा की है जनरल साहब, उसके लिये मैं आपको कैसे धन्यवाद दूँ ?

नेपोलियन—(उसकी ओर एकाएक मुड़ते हुए) मेरे काग़ज़ात लाओ (हाथ आगे बढ़ाता है)

स्त्री—जनरल ! (एकाएक अपना हाथ अपनी छाती पर रखती है, मानो वहाँ रक्खी हुई किसी चीज़ की रक्षा करना चाहती है)

नेपोलियन—तुमने उस मूर्ख को धोखा देकर उससे काग़ज़ात ले लिए। तुमने आदमी का भेष बनाया था। मैं अपने काग़ज़ात चाहता हूँ। वे तुम्हारे कपड़े के अंदर, तुम्हारे हाथ के नीचे, छाती पर हैं।

स्त्री—(फ़ौरन् अपने हाथ हटाती हुई) ओफ़् ! आप मुझसे किस प्रकार क्रूरता से बोल रहे हैं ! (अपनी छाती से एक रूमाल निकालती है) मुझे डर लगता है। (अपनी आँख छूती है, मानो आँसू पोंछती है)

नेपोलियन—मालूम होता है, आप मुझे नहीं जानतीं महाशया ! अन्यथा आप रोने का ढोंग करने का कष्ट न उठातीं।

स्त्री—(अपने आँसुओं के बीच भी मुसकिराने का प्रयत्न करती हुई) जी हाँ, मैं आपको जानती हूँ। आप प्रसिद्ध जनरल बोनापार्ट हैं। (वह उसका नाम इटैलियन ढंग से लेती है। ब्बा-ना-पार्र-टे)

नेपोलियन—(गुस्से से, फ्रांसीसी ढंग से उच्चारण करते हुए) बोनापार्ट महाशया, बोनापार्ट। कृपा कर काग़ज़ात दीजिए।

स्त्री—किंतु मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ जनरल। (जनरल असभ्यतापूर्वक उससे रूमाल छीनता है, वह रुष्ट होती है।)

नेपोलियन—(अपने सीने से दूसरा रूमाल निकालते हुए) आपने मेरे लेफ़्टिनेंट को लूटते समय अपना रूमाल देने की भलमंसाहत की थी। (वह दोनों रूमालों को देखता है) ये दोनों एक-से हैं। (वह उन्हें सूँघता है) एक ही सुगंधि है। (वह टेबल पर फेंक देता है) मैं काग़ज़ात का इंतज़ार कर रहा हूँ। यदि आप ख़ुद न देंगी, तो मैं उन्हें इस रूमाल की तरह विना लिहाज़ के ले लूँगा।

स्त्री—(गर्व के साथ डाँटती हुई) जनरल, क्या आप मुझे स्त्री समझकर धमकाते हैं ?

नेपोलियन—(कर्कशता से) हाँ।

स्त्री—(घबराकर, अवसर पाने का प्रयत्न करती हुई) किंतु मेरी समझ में नहीं आता। मैं—

नेपोलियन—तुम पूरी तरह समझती हो। तुम यहाँ पर इस-

लिये आईं कि तुम्हारे आस्ट्रियन मालिकों का अंदाज़ था कि मैं ६ मील दूर होऊँगा। मैं सदा उस स्थान पर पहुँच जाता हूँ, जहाँ मेरे शत्रु आशा तक नहीं करते। तुम शेर की गुफा में आ गई हो। आओ, तुम बहादुर स्त्री हो। समझ से काम लो। मुझे ज्यादह फ़ुरसत नहीं है, काग़ज़ात दे दो। (वह दृढ़ निश्चय के साथ आगे क़दम बढ़ाता है)

स्त्री—(बच्चे के समान निर्बल क्रोध से व्याकुल हो टेबल के पास लेफ़्टिनेंट द्वारा छोड़ी हुई कुर्सी पर रोते-रोते बैठती हुई) मैं बहादुर हूँ ? ओह ! आप कितना कम जानते हैं ! मैंने सारा दिन भयभीत अवस्था में बिताया है। प्रत्येक शंकित दृष्टि को और प्रत्येक धमकी से भरे हुए भाव को देखकर मेरा हृदय खिंचने लगता है, जिसके कारण मुझे अब भी पीड़ा हो रही है। क्या आप सोचते हैं कि सब आपके हो समान बहादुर हैं ? ओह ! आप बहादुर लोग बहादुरी के काम क्यों नहीं करते ? आप उन्हें हम साहस-हीनों के लिये क्यों छोड़ देते हैं ? मैं बहादुर नहीं हूँ। मैं हिंसा से घबराती हूँ—विपत्ति से मैं दुःखित होती हूँ।

नेपोलियन—(दिलचस्पी से) फिर तुमने अपने को इस विपत्ति में क्यों फँसाया ?

स्त्री—क्योंकि कोई दूसरा मार्ग नहीं था। मैं किसी पर भरोसा नहीं कर सकती थी। पर अब तो सब व्यर्थ हो गया। और यह सब आपके ही कारण हो रहा है, क्योंकि आपमें हृदय नहीं है, न भाव है, न (घुटने टेककर रोने लगती है) ओह ! जनरल,

मुझे जाने दो—मुझे बिना कुछ पूछे जाने दो। आपको काग़ज़ात मिल जायँगे, मैं क़सम खाती हूँ।

नेपोलियन—(अपना हाथ बढ़ाते हुए) हाँ, मैं उनके इंतज़ार में हूँ। (नेपोलियन को धोखा देने में असफल होते देख उसकी साँस रुक-सी रही है। परंतु जब वह चकित भाव से नेपोलियन की ओर देखती है, तो उसके चेहरे से साफ़ ज़ाहिर होता है कि वह धोखा देने के लिये कोई नई चालाकी सोच रही है। वह उसी सख़्ती से उसकी ओर देखती है)

स्त्री—(आख़िर को एक छोटी-सी उसास छोड़कर उठती हुई) मैं उन्हें आपको ला दूँगी। वे मेरे कमरे में हैं। (दरवाज़े की ओर मुड़ती है)

नेपोलियन—मैं आपके साथ चलूँगा, महाशया।

स्त्री—(शिष्टाचार तोड़ने पर रोष के साथ तनकर खड़ी होती है) जनरल, मैं आपको अपने कमरे में जाने की अनुमति नहीं दे सकती।

नेपोलियन—तब आपको यहाँ ठहरना होगा, महाशया। मैं आपके कमरे से अपने काग़ज़ात ढूँढ़ लाता हूँ।

स्त्री—(प्रकट रूप से अपना भेद खोलती हुई, ईर्षा से) आप कष्ट न उठाइए। वे वहाँ नहीं हैं।

नेपोलियन—नहीं, मैं तो तुम्हें बता ही चुका हूँ कि वे कहाँ हैं। (उसकी छाती की ओर संकेत करते हुए)

स्त्री—(दया की प्रार्थना करती हुई) जनरल साहब, मैं

सिर्फ़ एक खानगी चिट्ठी रख लेना चाहती हूँ, सिर्फ़ एक। मुझे उसे ले लेने दीजिए।

नेपोलियन—(रुखाई और सख़्ती से) क्या तुम्हारी यह माँग, उचित है?

स्त्री—(उसके साफ़ इनकार न करने से उत्साहित होकर) नहीं, किंतु उसके अनुचित होने के कारण ही आपको उसे स्वीकार करना चाहिए। क्या स्वयं आपकी माँगें उचित हैं? आपकी विजयों, आपकी महत्त्वाकांक्षाओं और आपके सौभाग्य के लिये हज़ारों प्राणियों का बलिदान हो चुका है, उसके सामने तो मैं जो माँगती हूँ वह बहुत ही तुच्छ चीज़ है! मैं केवल एक अबला स्त्री हूँ, और आप हैं एक बहादुर आदमी। (विनम्र तथा प्रार्थना-पूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखती और उसके समाने घुटने टेकने को झुकती है)

नेपोलियन—(कर्कशता से) उठो-उठो। (सचिंत भाव से घूमकर कमरे का एक चक्कर लगाता, और ज़रा रुककर विना मुँह फेरे हुए कहता है) तुम जान-बूझकर निरर्थक बातें कर रही हो। (वह उठती है और पूर्ण निराशा के साथ पलँग पर बैठ जाती है। जब वह फिरकर उसे देखता है, तो उसे मालूम होता है कि अब चिड़िया अब मेरी मुट्ठी में है। चलो झपट्टा मारने से पहले अपने शिकार से कुछ खिलवाड़ तो कर लूँ। अतः वह उसके पास आकर बैठता है। स्त्री भयभीत मालूम होती है और उससे ज़रा दूर हट जाती है, किंतु उसकी आँखों में नई आशा की किरण चमकती है। वह किसी गुप्त

परिहास का-सा आनंद अनुभव करता हुआ कहता है) तुम कैसे जानती हो कि मैं बहादुर आदमी हूँ ?

स्त्री—(आश्चर्य से) आप जनरल बोनापार्ट हैं ! (इटालियन उच्चारण से)

नेपोलियन—हाँ, मैं जनरल बोनापार्ट हूँ । (फ़रांसीसी उच्चारण पर ज़ोर देते हुए)

स्त्री—ओह ! आप इस प्रकार का प्रश्न कैसे पूछते हैं ? आप ! जो दो दिन पहले लोडी के पुल पर मृत्यु के भयंकर नाद से गूँजते हुए वातावरण में, नदी पार की तोपों के ऐन मुहाने पर द्वंद्व-युद्ध कर रहे थे ! (काँपती हुई) ओह ! आप बहादुर हैं ।

नेपोलियन—इसी तरह तुम भी हो ।

स्त्री—मैं ! (एकाएक विचित्र ख़्याल से) ओह ! क्या आप कायर हैं ?

नेपोलियन—(उग्र हँसी हँसते हुए और अपने घुटने पर थपकी देकर) यही एक प्रश्न है जो कभी किसी सिपाही से नहीं पूछना चाहिए । सारजंट रँगरूट की ऊँचाई, उम्र, दम, और उसके अंगों आदि के विषय में ही पूछताछ करता है किंतु उसके साहस के बारे में वह कभी कुछ नहीं पूछता । (वह उठता है और हाथों को कमर के पीछे रख सिर झुकाकर इधर-उधर टहलने लगता है और मन-ही-मन हँसता है)

स्त्री—(इसमें हँसी की कोई बात न पाकर) आह ! आप भय

के बीच भी हँस सकते हैं। तब तो आप नहीं जानते कि भय क्या है ?

नेपोलियन—(पलँग के पीछे आते हुए) अच्छा यह तो बताओ कि परसों एक मात्र लोडी के पुल पर मेरे पास आने से ही यदि वह चिट्ठी मिल सकती—उसके अतिरिक्त कोई अन्य निश्चित उपाय ही न होता, और यदि तुम तोप के गोलों से किसी तरह बच जातीं ! (वह काँपती है और एक क्षण के लिये अपने हाथ से आँखें ढँक लेती है) तो क्या तुम वहाँ जाने से डरती ?

स्त्री—बहुत ज्यादा डरती। (अपने हाथ से हृदय दबाती है) उसकी कल्पना से ही पीड़ा होती है।

नेपोलियन—(सख़्ती से) क्या तब भी तुम उन काग़ज़ात के लिये आतीं ?

स्त्री—(कल्पित भय से व्याकुल होकर) मुझसे मत पूछो, मैं ज़रूर आती।

नेपोलियन—क्यों ?

स्त्री—मुझे आना ही पड़ता, क्योंकि कोई दूसरा मार्ग नहीं था।

नेपोलियन—(निश्चय के साथ) क्योंकि तुम्हें भय की अपेक्षा मेरे पत्रों की चाह अधिक थी। संसार-भर में केवल एक मनोविकार है, भय। मनुष्य के हज़ारों गुणों में से एक गुण ऐसा है जो मेरी सेना के सब से छोटे ढोलवाले लड़के में

भी उसी प्रकार मिलेगा जैसे कि मुझमें, वह है भय। भय ही मनुष्यों से युद्ध कराता है। उदासीनता उनको रण-क्षेत्र से भगा देती है। भय ही युद्ध की एक-मात्र शक्ति है। भय! मैं भय को अच्छी तरह जानता हूँ, तुमसे क्या किसी भी स्त्री से अधिक अच्छी तरह। मैंने एक बार पेरिस में बाँके स्विस सिपाहियों की सेना को अपनी आँखों के सामने ही भीड़ द्वारा नष्ट हो जाने दिया, क्योंकि उस समय मैंने भय के मारे बीच-बराव नहीं किया। उस भीड़ को देखकर मैं अपने सारे शरीर में कायरता का अनुभव करने लगा। अभी ही सात महीने पहले मैंने अपनी उस दिन की शर्म का बदला उस भीड़ को तोप के गोलों से नष्ट करके ले लिया। इतना ही नहीं, कोई भी पुरुष या स्त्री भय के कारण क्या कभी अपने मनोवांछित उद्देश्य की पूर्ति से रुक सकते हैं? कभी नहीं। मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें ऐसे २०००० कायर दिखाऊँ जो शराब के एक प्याले के लिये प्रति दिन मौत की जोखिम उठाने के लिये तैयार रहते हैं। क्या तुम्हारा ख़याल है कि सेना के मनुष्यों की अपेक्षा स्त्रियाँ ज्यादा बहादुर नहीं होतीं, क्योंकि संसार में उनका जीवन कम क़ीमती है? मैं न तो भय की परवाह करता हूँ और न बहादुरी की। यदि तुम लोडी में मेरे पास आतीं, तो तुम भयभीत न होतीं। एक ही बार में पुल पर पहुँच जातीं क्योंकि मेरे पास आकर इष्ट वस्तु को ले लेने की आवश्यकता के सामने तुम्हारे हृदय के दूसरे सभी

विकार दब जाते। अब मान लो कि तुम यह सब करके, चिट्ठी अपने हाथ में लिए हुए सुरक्षित-रूप से उद्दिष्ट स्थान पर जा पहुँचतीं और वहाँ, उस समय तुमसे कोई पूछता कि क्या तुम कायर हो, तो यह जानते हुए भी—कि मेरे पास पहुँचकर तुम अत्यंत भयभीत हो गई थीं परंतु तुम्हारी विवशता ने तुम्हारे हृदय को भयभीत करने की जगह, उद्देश्य-पूर्ति के लिये अत्यंत दृढ़ कर दिया था और तुम्हारी स्वाभाविक भीरुता तुम्हारे निरुपाय होने के कारण साहस, प्रत्युत्पन्नमतित्व, सतर्कता और दृढ़-निश्चयता में परिणत हो गई थी—तुम क्या जवाब देतीं ?

स्त्री—(उठती हुई) ओह ! आप वीर हैं, प्रकृत वीर।

नेपोलियन—ऊँह। प्रकृत वीर नाम की तो कोई चीज़ ही नहीं होती। (**उसके उत्साह की ओर लापरवाही दिखाते हुए कमरे में इधर-उधर टहलता है, किंतु इस बात से अप्रसन्न नहीं होता कि उसीने उसका उत्साह बढ़ाया है**)

स्त्री—जी हाँ, होती है, जिसे आप मेरी बहादुरी कहते हैं, उसमें और आपकी बहादुरी में फ़र्क़ है। आप लोडी का युद्ध स्वयं अपने लिये जीतना चाहते थे न कि किसी दूसरे के लिये, क्यों ?

नेपोलियन—बेशक। (**एकाएक सँभलकर**) ठहरो, नहीं। (**वह एकाएक सात्त्विक भाव धारण करता है, मानो पूजा के मंत्र कह रहा हो**) मैं तो फ़रांसीसी प्रजातंत्र का एक तुच्छ सेवक हूँ, और पुरातन

काल के वीरों के चरण-चिह्नों का नम्रता-पूर्वक अनुसरण कर रहा हूँ। मैं युद्ध को मनुष्य-मात्र के लिये जीतता हूँ न कि अपने और अपने देश के लिये।

स्त्री—(निराश होकर) ओह ! तब तो फिर आप स्त्रीवत् वीर हैं। (वह फिर बैठ जाती है। उसका सारा उत्साह चला जाता है। उसकी कोहनी पलँग पर है और उसका गाल हाथ पर)

नेपोलियन—(महान् आश्चर्य से) स्त्रीवत् !

स्त्री—(अनवधानता से) जी हाँ, मेरे समान। (गहरी उदासी से) क्या आप सोचते हैं कि यदि मुझे अपने लिये उन काग़ज़ों की ज़रूरत होती, तो उनके लिये युद्ध में प्रवेश करने का साहस करना तो दूर रहा, इस होटल में आपसे मिलने के लिये आपकी अनुमति लेने का भी साहस मुझमें न होता। मेरा साहस केवल गुलामी के लिये है; स्वयं मेरे लिये उस साहस का कोई उपयोग नहीं। मैं तो केवल प्रेम, दया, और किसी दूसरे को बचाने, उसकी रक्षा करने के भाव से ही ऐसे, काम कर सकती हूँ जिनसे मुझे, स्वयं डर लगता है।

नेपोलियन—(अवज्ञा से) हश् ! (वह उसके पास से तिरस्कार-पूर्वक हट जाता है)

स्त्री—आहा ! अब आप को मालूम हुआ कि मैं वास्तव में बहादुर नहीं हूँ। (छिछोरेपन से भरी हुई अनवधानता धारण करती हुई) किंतु जब आप स्वयं केवल दूसरों के लिये युद्ध

जीतते हैं, तब आपको मुझसे घृणा करने का क्या अधिकार है? अपने देश के लिये! देश-भक्ति से! इसी को तो मैं स्त्रीवत् कहती हूँ। यह कार्य एक फ़रांसीसी के ही योग्य है!

नेपोलियन—(क्रोध से) मैं फ़रांसीसी नहीं हूँ।

स्त्री—(सरलता से) मैं सोचती हूँ आपने अभी कहा था कि आपने लोडी का युद्ध अपने देश के लिये जीता। जनरल साहब, मैं आपका नाम इटालियन उच्चारण से लूँ या फ़रांसीसी उच्चारण से?

नेपोलियन—आप मेरी सहनशीलता का बेजा फ़ायदा उठा रही हैं, महाशया। मैं जन्म से फ्रांस की प्रजा हूँ न कि फ्रांस का निवासी।

स्त्री—(पलँग पर अपने हाथ जमाकर और नेपोलियन की बातों में बड़ी दिलचस्पी दिखाती हुई आगे झुककर) मैं सोचती हूँ कि आप आजन्म किसी की प्रजा नहीं बने।

नेपोलियन—(विषय परिवर्तन से बहुत प्रसन्न होकर) एँ! एँ! क्या तुम सचमुच ही ऐसा समझती हो?

स्त्री—मुझे विश्वास है।

नेपोलियन—ठीक! ठीक!—पर शायद तुम्हारा विचार ठीक नहीं है, (आकस्मिक स्वीकृति से प्रकट होनेवाली आत्म-प्रशंसा उसके कानों में खटकती-सी है, वह लज्जित होकर एकाएक रुकता है। फिर, गंभीरता धारण करके पुरातन काल के महारथियों का अनुकरण करते हुए, ओजस्वी स्वर में कहता है) किंतु हमें केवल

अपने लिये नहीं जीना चाहिए। यह कभी मत भूलो कि हमें सदा दूसरों का ख़याल रखना, दूसरों के लिये काम करना, और उन्हीं के हित के लिये उनका नेता बनना तथा उनपर शासन करना चाहिए। चरित्र के वास्तविक महत्त्व की नींव आत्म-त्याग ही है।

स्त्री—(उसास के साथ पुनः भाव बदलती हुई) आह! यह तो बड़ी आसानी से ही मालूम हो सकता है कि आपने अपने वक्तव्य के अनुसार कार्य करने का कभी प्रयत्न ही नहीं किया, जनरल साहब।

नेपोलियन—(ब्रूटस और सिपियो-जैसे महारथियों के पराक्रम-को एकदम भुलाकर, रोष से) इस वक्तव्य से आपका क्या मतलब है, महाशया?

स्त्री—क्या आपने नहीं देखा कि मनुष्य सदैव उन वस्तुओं की तारीफ़ बहुत बढ़ाकर किया करते हैं, जो उन्हें नहीं मिलतीं? ग़रीब लोग सोचते हैं कि .खूब सुखी और सच्चे होने के लिये धन को छोड़ अन्य किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य सत्य, पवित्रता और निःस्वार्थता की इस लिये पूजा करता है, कि वह अपने दैनिक जीवन में इनका तनिक भी अनुभव और उपयोग नहीं करता। आह! क्या ही अच्छा हो, यदि वह इस बात को जान जाय।

नेपोलियन—(क्रोध-युक्त उपहास से) यदि वह जान जाय? आप ही बताइए, आप .खुद जानती हैं?

स्त्री—(अपनी भुजाएँ नीचे की ओर तानकर, हाथों से घुटने पकड़े हुए और ठीक सामने की ओर देखती हुई) जी हाँ। दुर्भाग्य से मैं अच्छा स्वभाव लेकर जन्मी थी, इसी कारण मुझे उनका मूल्य मालूम है। (नेपोलियन की ओर एक क्षण के लिये आँख उठाकर) मैं आपसे सच कहती हूँ जनरल, अच्छा स्वभाव पाना बड़ा दुर्भाग्य है। वास्तवमें मुझमें सच्चाई, निःस्वार्थता, आदि समस्त सद्गुण हैं; पर इनसे दुनिया में फ़ायदा कुछ नहीं। इनके कारण केवल कायरता और चरित्र-हीनता का ही जन्म होता है। वास्तव में इनके कारण ही मनुष्य अपने व्यक्तित्व के निगूढ़ तत्त्वों का अनुभव नहीं कर सकता। उसमें आत्म-विश्वास नहीं रहता।

नेपोलियन—अच्छा। (गहरी दिलचस्पी के साथ फ़ौरन् उसकी ओर मुड़ता है)

स्त्री—(बढ़ते हुए उत्साह से उत्कटता-पूर्वक) व्यक्तिगत आत्म-निर्भरता के अतिरिक्त आपकी शक्ति का रहस्य क्या है ? आप केवल अपने लिये ही लड़ सकते और देश जीत सकते हैं, न कि किसी दूसरे के लिये। अपनी भवितव्यता का आपको भय नहीं। आप हमें सिखाते हैं कि यदि हम में संकल्प और साहस हो, तो हम सब क्या हो सकते हैं; और इसीलिये (एकाएक नेपोलियन के सामने घुटने टेककर) हम सब आपकी पूजा करने लगते हैं। (उसके हाथ चूमती है)

नेपोलियन—(अभिभूत होकर) अरे! अरे! उठिए, महाशया।

स्त्री—मेरी इस भक्ति को अस्वीकार न करिए। आप इसके अधिकारी हैं। आप फ़्रांस के बादशाह होंगे।

नेपोलियन—(शीघ्रता से) सावधान। राज-द्रोह !

स्त्री—(दृढ़ता के साथ) हाँ, फ़्रांस के बादशाह ; फिर योरप के बादशाह, शायद संसार के बादशाह। मैं तो राज-भक्ति की शपथ लेनेवाली केवल पहली प्रजा हूँ, (फिर उसका हाथ चूमते हुए) मेरे बादशाह !

नेपोलियन—(विचलित होकर, उसे उठाते हुए) अरे-अरे ! नहीं-नहीं, यह मूर्खता है। उठो, शांत हो, शांत हो। (उसे थपकाते हुए) हाँ-हाँ, सँभलो।

स्त्री—(आनंद के आँसुओं को रोकती हुई) हाँ, मैं जानती हूँ कि जो बात आप मुझसे कहीं अधिक अच्छी तरह समझते हैं, उसे आपको बताना धृष्टता है। परंतु आप मुझसे नाराज़ तो नहीं हैं ?

नेपोलियन—नाराज़ ! नहीं-नहीं, ज़रा भी नहीं, ज़रा भी नहीं। तुम चतुर, बुद्धिमती और मनोहरा हो, (उसके गाल पर थपकी लगाता है)। आओ, अब हम दोनों मित्र बन जायँ।

स्त्री—(उज्जलसित होकर) आपकी मित्र ! आप मुझे अपनी मित्र बनाएँगे ! आह ! (उज्ज्वल मुसकिराहट के साथ अपने दोनो हाथ फैलाती है) देखिए, मैं आपके प्रति अपना विश्वास प्रकट करती हूँ।

नेपोलियन—(आँखें दमकाते हुए क्रोध से चीख़कर) क्या ?

स्त्री—क्या मामला है ?

नेपोलियन—तुम मुझ पर अपना विश्वास इसलिये दिखाती हो कि मैं भी बदले में तुम्हारे प्रति अपना विश्वास प्रकट करूँ, और धोखा देकर तुम्हें वे काग़ज़ात ले जाने दूँ, एं ? अह ! तुम मेरे साथ चालें चल रही थीं, और मैं भी उसी प्रकार फँसता जा रहा था जैसा वह बेवक़ूफ़ लेटिफ्नेंट फँसा था। (धमकी के साथ उसकी ओर बढ़ता है) । लाओ काग़ज़ात। जल्दी लाओ, अब टाल-मटोल नहीं चल सकती।

स्त्री—(पलँग के उस ओर दौड़कर जाती हुई) जनरल !

नेपोलियन—जल्दी, मैं कहता हूँ। (चपलता से कमरे के बीच में पहुँचकर उसे बाग़ की ओर जाने से रोक देता है)

स्त्री—(रुककर, उसका सामना करती हुई) मुझसे इस तरह बातचीत करने की हिम्मत !

नेपोलियन—हिम्मत ?

स्त्री—हाँ, हिम्मत। तुम कौन हो, जो मुझसे इस प्रकार अशिष्टता से बोलने का अधिकार दिखाते हो ? ओह ! नीच, गँवार ! कोर्सिका का उठाईगीरा, आ गया न अपनी ज़ात पर ?

नेपोलियन—(आपे से बाहर होकर) चुड़ैल ! (दारुणता से) केवल एक बार फिर पूछता हूँ कि वे काग़ज़ात मुझे देती है, या मैं जबरदस्ती छीन लूँ ?

स्त्री—(अपने हाथ नीचे गिराकर) छीन लो, जनरल। (वह बाघ के समान उसकी ओर झपटने के लिये घूरता है, स्त्री शहीद के समान अपनी छाती पर हाथ रखकर खड़ी हो जाती है। उसके वे हाव-भाव तत्क्षण नेपोलियन के नाट्य-कौशल को जाग्रत् करते हैं। वह यह दिखाने की अभिलाषा से कि नाट्य करने में भी मैं तुमसे कम नहीं हूँ, अपने क्रोध को भूल जाता है। वह उसे क्षण-भर विकल्प में रखता है, फिर एकाएक चेहरे का भाव बदल देता है। उत्तेजक शांति के साथ अपने हाथ पीछे कर लेता और दो बार उसे नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे तक देखता है। फिर नास की एक चुटकी लेकर सावधानी से अपनी उँगली पोंछकर रूमाल जेब में रखता है। उस स्त्री का वीरता का नाट्य अधिकाधिक हास्यास्पद होता जाता है)

नेपोलियन—(अंत में) अच्छा ?

स्त्री—(व्यस्त होकर, किंतु हाथों को अब भी उसी भक्ति-भाव से उसी प्रकार रक्खे हुए) अच्छा, अब तुम क्या करना चाहते हो ?

नेपोलियन—तुम्हारा यह नाट्य-भाव बिगाड़ना।

स्त्री—पशु ! (उस भाव को छोड़कर वह पलँग के पास आती है, और उसकी ओर पीठ करके खड़ी होती है, उसके हाथ पीछे की ओर हैं)

नेपोलियन—अहा ! यह हाव उससे अच्छा है। अब सुनो, मैं तुम्हें चाहता हूँ, और इससे अधिक मूल्यवान मैं तुम्हारे

द्वारा किए गए अपने आदर को समझता हूँ ।

स्त्री—तब तो जो वस्तु आपको प्राप्त नहीं है, उसे आप अधिक मूल्यवान् समझते हैं ।

नेपोलियन—इसकी परवाह न करो । उसे तो मैं अभी ज़बर्दस्ती प्राप्त कर लूँगा । पर मेरा विश्वास है कि तुम किसी भी हालत में मेरा तिरस्कार करने से बाज़ न आओगी । मैं ख़ूब जानता हूँ कि मैं तुम्हारे स्त्रीत्व, तुम्हारी सुंदरता, तुम्हारी वीरता और तुम्हारे अन्य उत्तम गुणों पर मुग्ध होकर अपने स्वाभाविक सौजन्य और शिष्टाचार के कारण चाहे जितना विनयशील हो जाऊँ—और चाहे मेरी भावुकता आड़े आकर मुझे तुमसे उन काग़ज़ात को न लेने दे जिनके लेने के लिये मैं इतना उत्सुक हूँ और जिन्हें मैं ज़रूर ही छीनूँगा, तथा तुम-जैसे शिकार को क़ाबू में पाकर भी यदि मैं डावाँडोल हो जाऊँ और विना कुछ किए ख़ाली हाथ चला जाऊँ, या बलात्कार करने में असमर्थ होने के कारण उदार वीरता का नाट्य करूँ और तुमसे कठोर व्यवहार करने की हिम्मत न होने के कारण अपनी कमज़ोरी छिपाने के लिये तुम्हारे साथ बड़ी नम्रता से पेश आऊँ—तो भी तुम अपने हृदय-तल में मेरा तिरस्कार ही करोगी । अरे क्या कोई भी स्त्री तुम्हारी तरह बेवक़ूफ़ हो सकती है ? पर यह याद रक्खो बोनापार्ट हर एक अवस्था का मुक़ाबिला कर सकता है । वह पत्थर से भी कठोर हो सकता और समय पर स्त्रियों से भी अधिक भीरु हो सकता है । समझती हो ?

(वह स्त्री, विना कुछ बोले, सीधी खड़ी हो जाती है, और अपने सीने से काग़ज़ात का एक पुलंदा निकालती है। एक बार तो उसको इतना जोश आता है कि वह उस पुलंदे को उसके मुँह पर फेंक कर मारे, किंतु उसकी शालीनता उसे आत्म-संतोष के इस गँवारू उपाय को काम में लाने से रोकती है। वह हाथ बढ़ाकर बड़ी नम्रता से उसे वह पुलंदा देती है, सिर्फ़ अपना सर फेर लेती है, और जैसे ही वह उन्हें लेता है वह स्त्री तत्काल कमरे के दूसरे सिरे पर चली जाती और अपना मुँह हाथों से ढाँक लेती है। उसका शरीर कुर्सी की ओट में छिप जाता है)

नेपोलियन—(काग़ज़ों पर मोद-पूर्ण दृष्टि डालते हुए) आहा ! ठीक है, ठीक है। (उनको खोलने के पहले वह उस स्त्री की ओर देखकर कहता है) मुझे क्षमा करो। (वह देखता है कि वह चेहरा छिपा रही है) मुझसे बहुत नाराज़ हो, क्यों ? (वह पुलंदे को खोलता है। पुलंदे की मुहर पहले से ही टूटी हुई है। भीतर के काग़ज़ात देखने के लिये वह उसको टेबल पर रखता है)

स्त्री—(धीरे से अपना हाथ हटाकर यह दिखाती हुई कि वह रो नहीं रही है, सिर्फ़ सोच रही है) नहीं। आपकी बात ठीक थी। किंतु मुझे आपके लिये अफ़सोस है।

नेपोलियन—(पुलंदे में से सबसे ऊपर का काग़ज़ उठाने से रुकते हुए) मेरे लिये अफ़सोस ! क्यों ?

स्त्री—मैं देखती हूँ कि आपका सम्मान नष्ट होनेवाला है।

नेपोलियन—हाँ ! इसमें ज्यादा बुरा तो कुछ नहीं है ? (वह काग़ज़ उठाता है) ।

स्त्री—और आपका सुख ?

नेपोलियन—सुख ? बाले, सुख तो संसार में मेरे लिये सब-से अधिक खेद-जनक वस्तु है । यदि मैं सुख की परवाह करता, तो क्या आज मैं जो कुछ हूँ वह हो सकता था ? और कुछ ?

स्त्री—इसके सिवा और कुछ नहीं । (नेपोलियन संतोष के उद्गार से उसकी बात बीच ही में रोकता है, पर वह शांतिपूर्वक बोलती है) आप फ़्रांस की दृष्टि में मूर्ख साबित होंगे ।

नेपोलियन—(शीघ्रता से) क्या ? (जिस हाथ में वह काग़ज़ लिए है, वह स्वतः नीचे गिर जाता है । वह स्त्री मानों कोई गूढ़ार्थं पूछती हुई शांत निस्तब्धता से उसकी ओर देखती है । वह उस पत्र को नीचे फेंक देता है । और एकाएक डाँट की बौछार शुरू करता है) तुम्हारा क्या मतलब है ? क्या फिर तुम कोई चाल चल रही हो ? क्या तुम समझती हो कि इन काग़ज़ों में क्या है यह मैं नहीं जानता ? मैं बताता हूँ, पहली बात है, आस्ट्रिया के सेनापति ब्यूलो का पीछे हटना जो मुझे मालूम है । वह केवल दो काम कर सकता है—क्योंकि उसके दिमाग़ में गोबर भरा है !—या तो वह मैंटुआ में बंद हो जायगा । या पेशीरा पर क़ब्ज़ा करेगा और इस प्रकार वेनिस की तटस्थता का उल्लंघन करेगा । तुम उस बूढ़े गोबर-दिमाग़ की जासूस

हो। उसे मालूम हो गया है कि उसका भेद खुल गया और उसने उस भेद की सूचना को, चाहे जैसे हो, रोकने के लिये तुम्हें भेजा है, मानों इस प्रकार वह मुझसे बच सकेगा ! पुराना बुद्धू ! दूसरे काग़ज़ात पेरिस से आए हुए मेरे मामूली पत्रादि हैं, जिनके बारे में तुम कुछ नहीं जानतीं।

स्त्री—(फुर्ती से और व्यवसायी ढग से) जनरल, आइए हम लोग आपस में उचित बँटवारा कर लें। आपके जासूसों ने आस्ट्रि-यन सेना के बारे में जो सूचना भेजी है उसे आप ले लें और पेरिस के पत्रादि मुझे दे दें। इससे मुझे संतोष हो जायगा।

नेपोलियन—(जिस शांति से यह प्रस्ताव किया गया, उससे मानों नेपोलियन का दम निकल गया) उचित बँटवारा (उसकी साँस रुकती है) मालूम होता है, महाशया, आप मेरे पत्रों को अपनी वस्तु समझने लगी हैं। मैं तो उन्हें आपसे छीनना चाहता हूँ।

स्त्री—(उत्कटता से) नहीं। सच कहती हूँ मैं आपका कोई पत्र—जो आपने किसी को या किसी ने आपको लिखा हो—नहीं माँगती। उस पुलंदे में एक चुराया हुआ पत्र है ; वह एक स्त्री ने एक पुरुष को जो कि उसका पति नहीं है—लिखा है उसके कारण उन दोनों की बड़ी बदनामी होगी।

नेपोलियन—प्रेम-पत्र ?

स्त्री—(कटु मधुरता से) प्रेम-पत्र के सिवा दूसरी कौन-सी वस्तु इतनी घृणा उत्पन्न कर सकती है ?

नेपोलियन—यह मुझे क्यों भेजा गया ? पति को मेरे क़ाबू में रखने के लिये, क्यों ?

स्त्री—नहीं-नहीं; उससे आपको कोई फ़ायदा नहीं हो सकता। मैं क़सम खाकर कहती हूँ कि आप उसको मुझे दे देंगे, तो आपको कोई हानि न होगी। वह केवल द्वेष के कारण आप के पास भेजा गया है—केवल उस स्त्री को हानि पहुँचाने के लिये जिसने कि उसे लिखा है।

नेपोलियन—तब फिर मेरे पास भेजने के बजाय उसके पति के पास क्यों नहीं भेजा गया ?

स्त्री—(पूर्ण रूप से स्थगित होकर) ओह ! (कुर्सी की पीठ से टिकती हुई) मैं नहीं जानती (सुस्त हो जाती है)।

नेपोलियन—आहा ! यही मैंने सोचा था ; काग़ज़ात वापस लेने के लिये नया षड्यंत्र ! (वह पुलंदे को टेबल पर फेंक देता है और उसके सामने कुटिल प्रसन्नता से जाता है) बाले, मैं तुम्हारी सराहना किए बिना नहीं रह सकता। यदि मैं इस प्रकार झूठ बोल सकूँ, तो बहुत दिक़्क़तों से बच जाऊँ।

स्त्री—(अपने हाथ मलते हुए) ओह ! मैं सोचती हूँ कि यदि मैंने आपसे वास्तव में झूठ ही बोला होता, तब तो आपने मेरा विश्वास कर लिया होता ! सत्य ही एक ऐसा है जिस पर कोई विश्वास नहीं करता।

नेपोलियन—(बेहद बेतकल्लुफ़ी से उसके साथ बर्ताव करते हुए) ख़ूब-ख़ूब। (वह अपने पीछे टेबल पर हाथ रख और—

उछलकर टेबल पर बैठ जाता है। वह कमर पर टेढ़ा हाथ रक्खे हुए है और उसकी टाँगें एक दूसरे से अलग हैं) आओ, कहानियों के विषय में मैं सच्चा कोर्सिकन हूँ, मुझे उनसे प्रेम है, और यदि मैं चाहूँ, तो तुम्हारी अपेक्षा अच्छी कहानियाँ कह सकता हूँ। दूसरे वक्त यदि तुमसे पूछा जाय कि पत्नी के दुराचार के संबंध का पत्र पति को क्यों न भेजा जाय, तो जवाब देना सिर्फ़ इसलिये कि पति उसे नहीं पढ़ेगा। भोली बाले, क्या तुम सोचती हो कि कोई मनुष्य लोकमत से विवश होकर अपने ऊपर फ़साद बढ़ाने को तैयार होगा क्या वह किसी से लड़े, अपना घर फोड़े और अपनी बदनामी कराके अपना जीवन नष्ट करेगा, जब कि वह अपने आपको इन दिक़्क़तों से बचा सकता है ?

स्त्री—(उद्विग्न होकर) मान लो कि उस पुलंदे में आप की ही पत्नी के संबंध का पत्र हो ?

नेपोलियन—(अपमानित होकर, टेबल से अलग होकर) तुम गुस्ताख़ी करती हो, महाशया।

स्त्री—(नम्रता से) मैं क्षमा माँगती हूँ। सीज़र की पत्नी शंका से परे है।

नेपोलियन—(इरादतन बड़प्पन का भाव धारण करके) तुमने अशिष्ट व्यवहार किया है। मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ। भविष्य में अपनी कहानियों में वास्तविक मनुष्यों की चर्चा मत करना।

स्त्री—(इस भाषण की, जो कि उसकी दृष्टि में शिष्टाचार के विरुद्ध है नम्रता-पूर्वं अवहेलना करती हुई और टेबल की ओर जाने के लिये उठती हुई) जनरल, उसमें दर असल एक स्त्री का पत्र है, (पुलंदे की ओर इशारा करती हुई) उसे मुझे दीजिए।

नेपोलियन—(उसे पत्रों के पास न पहुँचने देने के लिये आगे बढ़ते हुए क्रूरता-पूर्वक संक्षेप में) क्यों ?

स्त्री—वह मेरी पुरानी मित्र है, हम दोनों स्कूल में साथ-साथ पढ़ती थीं। उसने मुझे लिख भेजा है कि उस पत्र को आपके हाथ में पड़ने से रोकूँ।

नेपोलियन—यह मुझे क्यों भेजा गया है ?

स्त्री—क्योंकि इसमें डायरेक्टर बोराज़ के चरित्र पर आक्षेप है।

नेपोलियन—(गुस्से से देखते हुए, प्रकट रूप से चकित होकर) बोराज़ ! (उद्धतता से) सावधान महाशया। डायरेक्टर बोराज़ मेरा स्नेही मित्र है।

स्त्री—(शांति से सिर हिलाकर) जी हाँ। आप अपनी पत्नी के ज़रिए से उसके मित्र बने हैं।

नेपोलियन—फिर ! मैंने तुम्हें अपनी पत्नी के बारे में बातचीत करने के लिये मना किया है न ? (वह उत्सुकता से उसकी ओर देखती रहती है और उसकी डाँट की परवा नहीं करती। अधिकाधिक उत्तेजित होकर वह अपना उद्धत भाव त्यागता है। वह स्वयं कुछ-कुछ अधीर हो चला और अपनी आवाज़ को दबाकर

सशंक भाव से कहता है) यह कौन स्त्री है जिसके साथ तुम्हारी इतनी गहरी सहानुभूति है ?

स्त्री—ओह ! जनरल, मैं तुम्हें कैसे बताऊँ ?

नेपोलियन—(**क्रुद्ध और चकित होकर कुछ चिढ़ से इधर-उधर टहलना शुरू करते हुए**) अच्छा, तो तुम एक दूसरे के दुश्चरित्र का समर्थन करती हो ? तुम सब एक समान हो ; स्त्री हो न तभी।

स्त्री—(**अपमान से उत्तेजित होकर**) जैसे आप सब एक समान नहीं हैं, वैसे ही हम भी नहीं हैं। क्या आप सोचते हैं कि यदि मैं दूसरे आदमी को प्यार करूँ, तो भी अपने पति की तरफ़ प्यार ज़ाहिर करती रहूँगी या उससे अथवा सारे संसार से कहने में डरूँगी ? किंतु यह स्त्री उस प्रकार की नहीं है। वह मनुष्यों को धोखा देकर उन पर शासन करती है ; और (**घृणा से**) उन्हें यह पसंद है, और वे उसे शासन करने देते हैं। (**वह फिर उसकी ओर पीठ करके बैठ जाती है**)

नेपोलियन—(**उसकी बात पर ध्यान न देते हुए**) बोराज़, बोराज़ ! (**भारी धमकी देते हुए, उसकी ओर घूमता है। उसके चेहरे पर ख़ून छा जाता है**) सावधान, सावधान। सुनती हो ? तुम बहुत ज़्यादा बढ़ चली हो।

स्त्री—(**सरल भाव से उसकी ओर मुँह फेरती हुई**) क्या मामला है ?

नेपोलियन—तुम्हारा इशारा किसकी तरफ़ है ? यह स्त्री कौन है ?

स्त्री—(उसका दाहिना हाथ कुर्सी के पीछे ज़रा टिका हुआ है। वह एक पैर दूसरे पर चढ़ाए बैठी है और शांति-पूर्ण उदासीनता से उसकी ओर देखती हुई उसकी क्रोधयुक्त तेज़ दृष्टि का सामना कर रही है) वह है एक गर्वीली, मूर्ख, छिछोरी औरत, एक अत्यंत योग्य और महत्त्वाकांक्षी पति की पत्नी। वह अच्छी तरह जानता है कि उसकी स्त्री ने अपनी उम्र, अपनी आमदनी, अपनी सामाजिक स्थिति आदि वे बातें जिनके बारे में मूर्ख स्त्रियाँ झूठ बोला करती हैं, बिलकुल झूठमूठ की ही बताई हैं—वह यह भी जानता है कि वह स्त्री किसी सिद्धांत पर या किसी पुरुष के साथ सच्ची नहीं रह सकती; तो भी वह उसे प्यार किए विना नहीं रह सकता और अपने पुरुष-स्वभाव के अनुसार अपनी उन्नति करने की दृष्टि से बोराज के लिये उसका उपयोग किए विना नहीं रह सकता।

नेपोलियन—(चुपके से, क्रोध-युक्त दबे हुए स्वर में) क्यों जी, यह सब कथा तुमने पत्र आदि देने के लिये मजबूर मुझसे करने का तुम्हें बदला लेने के लिये ही गढ़ी है न ?

स्त्री—क्या आपका यह मतलब है कि आप ही उस प्रकार के आदमी हैं ?

नेपोलियन—(घबराकर, वह अपने हाथ पीछे की ओर पकड़ता है, उसकी उँगलियाँ काँपती हैं और वह वहाँ से अँगीठी के पास उत्तेजित होकर जाता है।) यह स्त्री मुझे पागल बना देगी। (उस स्त्री से) चली जाओ।

स्त्री—(अचल रूप से बैठी हुई) उस पत्र को लिए विना नहीं।

नेपोलियन—जाओ, मैं कहता हूँ। (अँगीठी से बाग़ तक और वहाँ से वापिस हो टेबल तक टहलते हुए) तुम्हें कोई पत्र नहीं मिलेगा। मैं तुम्हें नहीं चाहता। तुम घृणा के योग्य हो, और शैतान के माफ़िक़ भद्दी। मैं किसी अपरिचित स्त्री से सताया जाना नहीं चाहता। चली जाओ। (वह उसकी ओर पीठ फेरता है। वह स्त्री मज़े में प्रसन्न होकर अपना गाल अपने हाथ पर टेककर उसकी ओर देखकर हँसती है। वह फिर लौटता है और ग़ुस्से से उसकी ओर मुँह चिढ़ाकर) हा-हा-हा? तुम किस पर हँस रही हो?

स्त्री—आप पर, जनरल। मैंने कई बार पुरुषों को पालतू बनते और बच्चों के समान व्यवहार करते हुए देखा है, किंतु मैंने किसी वास्तविक महान् पुरुष को ऐसा करते पहले नहीं देखा?

नेपोलियन—(पशुवत् उन शब्दों में ही उसे जवाब देते हुए) छिः! चापलूसी! चापलूसी! भद्दी, निर्लज्ज चापलूसी!

स्त्री—(उसके गाल लाल हो जाते हैं और वह उछलकर कहती है) ओह! आप बहुत ख़राब हैं। अपने पत्र रखिए। उनमें अपने अपमान की कहानी पढ़िए। उनसे आपको बहुत लाभ होगा। प्रणाम। (रोष से भीतर के दरवाज़े की ओर जाती है)

नेपोलियन—अपने अपमान! ठहरो। वापस आओ। वापस

आओ, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ। (स्त्री उसके क्रूर आज्ञादायक स्वर की गर्व-पूर्वक अवहेलना करती और दरवाज़े की ओर बढ़ती जाती है। वह उसके पास दौड़कर जाता और उसकी कलाई पकड़ लेता है; और उसे वापस खींच लाता है) अब तुम्हारा क्या मतलब है? बताओ, मैं तुमसे कहता हूँ बताओ। (उसे धमकी देता है और वह बिना झिझके धृष्टता से उसकी ओर देखती है) धृष्ट शैतान! क्या तुम इस भद्र प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकतीं?

स्त्री—(उसकी इस सख़्ती से मर्माहत होकर) आप मुझसे क्यों पूछते हैं? जवाब तो आपको मिल गया।

नेपोलियन—कहाँ?

स्त्री—(टेबल पर पड़े हुए पत्रों की ओर दिखाती हुई) वहाँ। सिर्फ़ उन्हें पढ़ लीजिए।

नेपोलियन—(पुलंदा उठा लेता है, झिझकता है, शंकित भाव से उसकी ओर देखता है और फिर उसे फेंक देता है) मालूम होता है कि तुम अपनी पुरानी मित्र के सम्मान की चिंता को भूल गईं।

स्त्री—अब उसे कोई जोखिम नहीं। उसने अपने पति को अच्छी तरह नहीं जाना।

नेपोलियन—तब तो मुझे पत्र पढ़ना ही पड़ेगा? (वह अपना हाथ मानों फिर पुलंदा उठाने के लिये बढ़ाता है। उसकी दृष्टि उस स्त्री की ओर है)

स्त्री—मैं नहीं समझती कि आप पत्र पढ़ना अब किस प्रकार

टाल सकते हैं। (वह फ़ौरन् अपना हाथ खींच लेता है) ओह! डरिए मत, आपको उसमें बहुत-सी मज़ेदार बातें मिलेंगी।

नेपोलियन—जैसे ?

स्त्री—जैसे, बोराज़ से द्वंद्व-युद्ध, घरेलू झगड़ा, बरबाद घर, लोगों में बदनामी, कुत्सित जीवन एवं और सब प्रकार की बातें।

नेपोलियन—हूँ-हूँ! (वह उसकी ओर देखता है, पुलंदा उठाता है और फिर उसकी ओर देखता है। ओठों को दबाता है और उस पुलंदे को हाथ में सम्हालता है। फिर उस स्त्री की ओर देखता है। पुलंदे को दाहने हाथ से बाएँ हाथ में लेता है और उसे अपनी पीठ के पीछे रखता है। फिर घूमकर जाते हुए अपना सिर खुजाने के लिये दाहना हाथ उठाता है। बाग़ के किनारे तक जाता है, वहाँ अंगूर की टट्टी की ओर देखता हुआ एक क्षण खड़ा रहता है। वह गहरे विचार में मग्न है। वह स्त्री चुपचाप कुछ तिरस्कार के साथ उसकी ओर देखती रहती है। एकाएक वह घूमता है और पूर्ण तेज़ी तथा निश्चय के साथ वापस आता है) महाशया, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करता हूँ। तुम्हारा साहस और निश्चय विजय के योग्य है। जिन पत्रों के लिये तुम इतनी अच्छी तरह लड़ी हो, उन्हें ले लो, और अब से याद रक्खो कि नीच, गँवार, कोर्सिकन उठाईगीरे को तुमने दुश्मन के सामने जिस प्रकार दृढ़-निश्चयी पाया, उसी प्रकार युद्ध के बाद भी विजित के प्रति उसे उदार पाया। (वह उसे पुलंदा देता है)

स्त्री—(उसे विना लिए उसकी ओर घूरती हुई) मुझे आश्चर्य है कि अब आप क्या करना चाहते हैं ? (वह पुलंदे को ज़ोर से ज़मीन पर पटक देता है) आहा ! मेरे ख़याल में मैंने आपकी वह धज बिगाड़ दी । (वह उपहास से उसे अभिवादन करती है)

नेपोलियन—(फिर पुलंदा उठाकर) तुम ये चिट्ठियाँ लो और कृपा करे अभी चली जाओ ? (आगे बढ़कर उन्हें उसके सामने फेंकता है)

स्त्री—(बचकर टेबल की दूसरी ओर जाती हुई) नहीं मुझे आपके पत्र नहीं चाहिए ।

नेपोलियन—दस मिनट पहले तुम्हें और किसी बात से संतोष नहीं होता था ।

स्त्री—(सावधानी से टेबल के दूसरे छोर पर आकर) दस मिनट पहले आपने मेरा इतना अपमान नहीं किया था जो सहनशीलता की सीमा से परे हो गया हो ।

नेपोलियन—मैं (गुस्से को दबाते हुए) क्षमा माँगता हूँ ।

स्त्री—(रूखेपन से) धन्यवाद । (वह ज़बरदस्ती नम्र-भाव दिखलाते हुए टेबल पर से उठाकर उसे पुलंदा देता है । वह स्त्री—एक क़दम पीछे हटकर उसकी पहुँच के बाहर हो जाती है और कहती है) किंतु क्या आप यह नहीं जानना चाहते कि आस्ट्रियन मैंटुआ में है या पेशिरा में ?

नेपोलियन—मैं तुम्हें बता ही चुका हूँ कि मैं अपने शत्रु को विना जासूसों की सहायता के जीत सकता हूँ।

स्त्री—और वह पत्र ! क्या आप उसे पढ़ना नहीं चाहते ।

नेपोलियन—तुमने कहा है कि वह मेरे लिये नहीं है । दूसरों के पत्र पढ़ने की मुझे आदत नहीं । (वह फिर पुलंदा देता है)

स्त्री—उस हालत में उसे आपके पास रहने देने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती । मैं केवल यही चाहती थी कि आप उसे न पढ़ें । (प्रसन्नता से) प्रणाम, जनरल । (वह शांति से भीतर के दरवाज़े की ओर मुड़ती है) ।

नेपोलियन—(ग़ुस्से से पैकेट को पलँग पर फेंकते हुए) ईश्वर मुझे धीरज दे ! (वह निश्चय के साथ दरवाज़े के पास आता है और उसके सामने खड़ा हो जाता है) तुम्हें अपनी जान का कुछ ख़तरा है कि नहीं ? या तुम उन स्त्रियों में से हो जिनको मार खाना अच्छा लगता है ?

स्त्री—धन्यवाद । जनरल, इसमें शक नहीं कि यह भावना अत्यंत प्रबल है ; किंतु मैं इसे पसंद नहीं करती । मैं केवल घर जाना चाहती हूँ, बस । मैंने आपके काग़ज़ात चुराने की धृष्टता की थी, परंतु वे आपको वापिस मिल गए ; और आपने मुझे क्षमा कर दिया क्योंकि (उसी के स्वर की पूरी-पूरी नक़ल करती हुई) आप युद्ध के पहले दुश्मन के मुक़ाबले में जिस प्रकार दृढ़निश्चयी हैं उसी प्रकार युद्ध के बाद विजित के प्रति उदार हैं । क्या आप मेरा प्रणाम स्वीकार करके मुझे बिदा नहीं देंगे ? (वह अपना हाथ मधुरता से आगे बढ़ाती है)

नेपोलियन—(गहरे ग़ुस्से का भाव ज़ाहिर करते हुए उसके हाथ को झिटककर और दरवाज़ा खोलकर ज़ोर से पुकारते हुए) जोजफ़ ! (अधिक ज़ोर से) जोजफ़ ! (वह ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाता है और कमरे के बीच में आता है । वह स्त्री उससे बचने के लिये बाग़ की ओर ज़रा हट जाती है)

जोजफ़—(दरवाज़े में आकर) सरकार ?

नेपोलियन—वह मूर्ख कहाँ है ?

जोजफ़—आपकी हिदायत के अनुसार उसे ख़ूब भोजन दिया गया सरकार, और वह समय बिताने के लिये मेरे साथ जुआ खेलने की कृपा कर रहा है ।

नेपोलियन—उसे यहाँ भेजो । उसे यहाँ लाओ । उसके साथ जाओ । (जोजफ़ अविचलित तत्परता से शीघ्रतापूर्वक चला जाता है । नेपोलियन फ़ौरन् उस स्त्री की ओर घूमता है) मुझे आपको यहाँ कुछ क्षण रुकने का कष्ट देना होगा, महाशया । (वह पलँग के पास आता है और वह स्त्री बाग़ से कमरे के दूसरी ओर भंडारिए के पास आती है, और वहाँ उससे टिककर उसकी ओर देखती हुई खड़ी हो जाती है । वह पलँग पर से पुलंदा उठाता है । और उसे अपने सीने की जेब में सावधानी से रखकर इरादतन बटन लगा लेता है, और उसकी ओर ऐसे भाव से देखता जाता है जिससे यह ज़ाहिर होता है कि वह जो कुछ करनेवाला है उसे वह स्त्री जान जायगी और उसे पसंद नहीं करेगी । लेफ़्टिनेंट और उसके पीछे-पीछे जोज़फ़ के आने तक कोई बातचीत नहीं

होती। जोज़फ़ टेबल के नज़दीक विनयपूर्वक हाज़िरी में खड़ा रहता है। लेफ़्टिनेंट के पास न तो टोपी है, न तलवार, न दस्ताने, उसका मिज़ाज भोजन कर लेने के कारण बहुत सुधर गया है। वह स्त्री की ओर जाकर खड़ा हो जाता है, और नेपोलियन के बोलने की शांति-पूर्वक प्रतीक्षा करता है)

नेपोलियन—लेफ़्टिनेंट।

लेफ़्टिनेट—(उत्साह-पूर्वक) जनरल।

नेपोलियन—इस स्त्री से अधिक समाचार तो नहीं मिल सकते। किंतु इसमें कोई शक नहीं कि जिस आदमी ने धोखा देकर तुमसे वे चीज़ें ले ली थी; जैसा कि इसने तुम्हारे सामने स्वीकार किया है, इसका भाई था।

लेफ़्टिनेंट—(विजय से) मैंने आपसे क्या कहा था, जनरल! मैंने आपसे क्या कहा था!

नेपोलियन—तुम्हें उस आदमी का पता लगाना होगा। तुम्हारा सम्मान ख़तरे में है; इस युद्ध का निर्णय, और फ्रांस, योरप, और शायद मनुष्य-मात्र का भाग्य उन काग़ज़ात में लिखी हुई बातों पर अवलंबित है।

लेफ़्टिनेंट—जी हाँ, मैं सोचता हूँ कि वास्तव में वे महत्त्व-पूर्ण हैं (मानों यह बात उसे पहले न सूझी हो)

नेपोलियन—(फुर्ती से) वे इतने महत्त्व-पूर्ण हैं महाशय, कि यदि आप उन्हें ढूँढ़कर नहीं लावेंगे, तो आपकी फ़ौज के सामने आपकी तौहीन होगी।

लेफ़्टिनेंट—हाँ ! मैं आपसे कह सकता हूँ कि फ़ौज इसे पसंद नहीं करेगी।

नेपोलियन—स्वतः मुझे तुम्हारे लिये बहुत अफ़सोस है। यदि संभव होता, तो मैं बड़ी ख़ुशी से इस मामले को दबा देता परंतु इन काग़ज़ात पर कार्रवाई न करने के बारे में मुझसे कैफ़ियत माँगी जायगी। मुझे सारे संसार के सामने यह साबित करना पड़ेगा कि वे काग़ज़ात मुझे मिले ही नहीं, फिर तुम्हारे लिये उसका परिणाम चाहे जो हो। मुझे अफ़सोस है; परंतु तुम जानते हो कि मैं विवश हूँ।

लेफ़्टिनेंट—(भलमनसाहत से) ओह ! चिंता न कीजिए जनरल, वास्तव में आपकी बड़ी कृपा है। मुझे जो कुछ दंड होगा उसकी चिंता न कीजिए, मैं किसी तरह बच-बचाकर निकल जाऊँगा। काग़ज़ात मिलें या न मिलें, हम लोग आपके लिये आस्ट्रियनों को मार भगावेंगे। मैं आशा करता हूँ कि अब उस आदमी की तलाश में आप मुझे व्यर्थ न भटकावेंगे। मेरी समझ में नहीं आता कि उसको कहाँ ढूँढ़ूँ।

जोजफ़—(आदर-पूर्वक) आप भूलते हैं लेफ़्टिनेंट, उसके पास आपका घोड़ा है।

लेफ़्टिनेंट (चौंककर) मैं भूल गया था। (निश्चय के साथ) मैं उसकी तलाश में जाऊँगा जनरल, यदि वह घोड़ा इटली-भर में कहीं पर भी जीवित होगा, तो मैं उसका पता लगाऊँगा। मैं उन काग़ज़ात को नहीं भूलूँगा, डरिए नहीं। जोजफ़, जाओ

अपनी गाड़ी के किसी टट्टू पर ज़ीन कसो, तब तक मैं अपनी टोपी, तलवार और सब चीज़ लेकर आता हूँ। फ़ौरन् जाओ। (उसे धक्का देते हुए) फ़ौरन्

जोजफ़्—इसी क्षण, लेफ़्टिनेंट, इसी क्षण (वह बाग़ में ग़ायब हो जाता है। बाहर सूर्यास्त होने के कारण कुछ-कुछ लाल प्रकाश हो रहा है)

लेफ़्टिनेंट—(भीतर के कमरे की ओर जाते हुए और आस-पास देखते हुए) जनरल, मैंने आपको अपनी तलवार दी थी या नहीं ? ओ, अब मुझे याद आया। (चिढ़कर) किसी आदमी को गिरफ़्तार करने में यही तो होता है। उसको यह नहीं मालूम हो सकता कि कौन चीज़ कहाँ है (वह बोलते-बोलते कमरे के बाहर चला जाता है)

स्त्री—(जो अभी तक भंडारिए के पास खड़ी हुई है) इस सब-का मतलब क्या है, जनरल ?

नेपोलियन—वह तुम्हारे भाई का पता नहीं लगा सकेगा।

स्त्री—हरगिज़ नहीं। मेरा कोई भाई है ही नहीं।

नेपोलियन—वे काग़ज़ात खो जायँगे, नहीं मिल सकेंगे।

स्त्री—वाहरी बेवक़ूफ़ी ! वे आपके कोट के अंदर हैं।

नेपोलियन—मेरे ख़याल में तुम्हारे लिये इस बे-बुनियाद बयान को साबित करना मुश्किल होगा। (वह स्त्री चौंकती है। और वह ज़ोर देकर कहता है) वे काग़ज़ात खो गए।

स्त्री—(चिंता से टेबल के कोने के पास जाती हुई) और उस

अभागे युवक के जीवन का बलिदान किया जायगा ?

नेपोलियन—उसका जीवन ! उसको गोली से मारने में जितनी बारूद लगेगी उसके मूल्य के बराबर भी उसके जीवन का मूल्य नहीं है। (तिरस्कार-पूर्वक घूमता है और अँगीठी के पास जाकर उस स्त्री की ओर पीठ करके खड़ा हो जाता है)

स्त्री—(विचार-पूर्वक) आप बहुत कठोर हैं। स्त्री और पुरुष आपके लिये उपयोग की वस्तु के अलावा और कुछ भी नहीं हैं, चाहे वे उपयोग में नष्ट ही क्यों न हो जायँ।

नेपोलियन—(उसकी ओर घूमकर) किसने इस आदमी को नष्ट किया—मैंने या तुमने ? किसने इसे धोखा देकर वे काग़ज़ात लिए ? उस समय तुमने उसके जीवन की चिंता की थी ?

स्त्री—(उसके लिये निश्चल-भाव से चिंतित होकर) ओह ! मैंने यह कभी नहीं सोचा था। मैंने बड़ी क्रूरता की; परंतु मैं कर भी क्या सकती थी। हाँ, क्या कर सकती थी ? ऐसा किए विना मैं वे काग़ज़ात कैसे पाती ? (प्रार्थना करती हुई) जनरल, आप उसे कलंक से बचा लीजिए।

नेपोलियन—(कुटिल हँसी हँसते हुए) तुम ख़ुद उसे बचा लो, तुम तो इतनी चालाक हो, तुम्हीं ने तो उसे नष्ट किया। (पाशविक तीव्रता से) मैं बुरे सिपाही से घृणा करता हूँ। (वह इरादतन बाग़ में जाता है। वह स्त्री प्रार्थना-पूर्ण दृष्टि से उसके पीछे कुछ क़दम जाती है, परंतु लेफ़्टिनेंट दस्ताने और टोपी

पहने, तलवार कसे, सड़क पर जाने के लिये तैयार होकर आता है, इससे वह रुक जाती है। वह बाहर के दरवाज़े की ओर जाने लगता है इतने में वह स्त्री उसे रोकती है)

स्त्री—लेफ़्टिनेंट ?

लेफ्टिनेंट—(महत्त्व के साथ) मुझसे देरी मत कराइए, आप जानती हैं। कर्तव्य, महाशया, कर्तव्य।

स्त्री—(प्रार्थना करती हुई) अजी महाशय, आप मेरे ग़रीब भाई के साथ क्या करनेवाले हैं ?

लेफ़्टिनेंट—क्या आपको वह बहुत प्यारा है ?

स्त्री—यदि उसको कुछ हुआ, तो मैं मर जाऊँगी। उसे आपको छोड़ देना होगा। (लेफ़्टिनेंट निराशा से अपना सिर हिलाता है) हाँ-हाँ, छोड़ना चाहिए। छोड़ना होगा, वह मरने के योग्य नहीं है। सुनिए, यदि मैं आपको उसका पता बता दूँ, यदि मैं उसे आपकी क़ैद में या आपके द्वारा जनरल बोनापार्ट के हाथ में सौंपने का वचन दूँ, तो अफ़सर और एक सज्जन की हैसियत से अपने सम्मान की क़सम खाकर क्या आप मुझे वचन देंगे कि आप उससे नहीं लड़ेंगे या उसके साथ किसी प्रकार निर्दयता का बर्ताव नहीं करेंगे ?

लेफ़्टिनेंट—पर मान लो वह मुझ पर हमला करे। उसके पास मेरे पिस्तौल हैं।

स्त्री—वह बड़ा कायर है।

लेफ़्टिनेंट—मुझे उसका इतना विश्वास नहीं है। वह चाहे जो कर सकता है।

स्त्री—यदि वह आप पर हमला करे, या किसी प्रकार आपका विरोध करे, तो मैं आपको वचन से मुक्त करती हूँ।

लेफ़्टिनेंट—मेरा वचन! मैंने वचन नहीं दिया। देखिए,—आप भी उसी के समान ख़राब हैं, आपने मेरे स्वभाव की अच्छाई से बेजा फ़ायदा उठा लिया। मेरे घोड़े का क्या होगा?

स्त्री—यह भी सौदे की एक शर्त है। आपका घोड़ा और पिस्तौल आपको वापिस मिलेंगे।

लेफ़्टिनेंट—मंज़ूर?

स्त्री—मंज़ूर (**वह अपना हाथ आगे बढ़ाती है**)

लेफ़्टिनेंट—(**हाथ पकड़े हुए**) अच्छा, मैं उसके सामने भेड़ के समान नम्र हो जाऊँगा। उसकी बहन अतिशय सुंदरी है। (**वह उसे चूमने का प्रयत्न करता है**)

स्त्री—(**उससे छूटकर**) ओ, लेफ़्टिनेंट! आप भूलते हैं। आपके जीवन की परीक्षा हो रही है। योरप का भाग्य मनुष्य-मात्र का भाग्य है।

लेफ़्टिनेंट—ओह! मनुष्य-मात्र के भाग्य के पीछे सर मत पचाओ। (**उसकी ओर आगे बढ़ते हुए**) केवल एक चुंबन।

स्त्री—(**टेबल के आस-पास हटती जाती है**) नहीं, जब तक आप अफ़सर की हैसियत से अपना सम्मान उज्ज्वल नहीं कर लेते। याद रखिए, अभी आपने मेरे भाई को क़ैद नहीं किया है।

लेफ़्टिनेंट—(फुसलाते हुए) आप मुझे बता देंगी वह कहाँ है ? बता देंगी न ?

स्त्री—मुझे सिर्फ़ एक इशारा करना काफ़ी है; और वह पाव घंटे में यहाँ आ जायगा।

लेफ़्टिनेंट—तब तो वह दूर नहीं है।

स्त्री—नहीं, बिलकुल नज़दीक। उसकी यहाँ ही प्रतीक्षा करो। वह मेरी सूचना पाते ही यहाँ आ जायगा और आपको आत्म-समर्पण कर देगा। समझे ?

लेफ़्टिनेंट—(परेशान होकर) कुछ गड़बड़ ज़रूर है; पर मैं कह सकता हूँ सब ठीक हो जायगा।

स्त्री—और जब तक आप यहाँ ठहरे हैं, तब तक क्या आप जनरल से समझौता कर लेना ठीक नहीं समझते ?

लेफ़्टिनेंट—अरे देखो, यह तो बुरी गड़बड़ होती जा रही है। कैसा समझौता ?

स्त्री—उनसे यह वचन ले लो कि यदि आप मेरे भाई को पकड़ लें, तो वे मान लेंगे कि आप दोषमुक्त हो गए। इस शर्त पर, आप जैसा चाहेंगे वैसा वचन वे दे देंगे।

लेफ़्टिनेंट—यह तो ख़राब ख़याल नहीं है। धन्यवाद। मैं प्रयत्न करूँगा।

स्त्री—अवश्य करिए और सबसे ज़्यादा इस बात का ख़याल रखिए कि उन्हें न मालूम होने पावे कि आप कितने चतुर हैं।

लेफ़्टिनेंट—मैं समझता हूँ, वे ईर्षा करेंगे।

स्त्री—उनसे सिवा इस बात के और कुछ मत कहना कि आपने या तो मेरे भाई को पकड़ लाने का या उस प्रयत्न में मर मिटने का निश्चय किया है। वे आप पर विश्वास नहीं करेंगे। तब आप मेरे भाई को पेश करें।

लेफ़्टिनेंट—(इस षड्यंत्र को पूरी तरह समझकर बीच में बात काटते हुए) "और अपनी मूर्खता पर हँसूँ ! अरे वाह ! तुम कितनी चालाक हो ! (चिल्लाते हुए) जोज़फ़ !

स्त्री—श्श ! जोज़फ़ से मेरे बारे में एक शब्द मत कहना। (वह अपनी उँगली ओठों पर रखती है। वह भी ऐसा ही करता है। वे एक दूसरे की ओर मना करती हुई दृष्टि से देखते हैं। बाद में, मत्त मुसकिराहट के साथ, वह स्त्री अपना हाथ इस प्रकार बढ़ाती है मानों उसे चुंबन दे रही हो और भीतर के दरवाज़े से बाहर भाग जाती है। वह पुलकित होकर गद्‌गद हो जाता है। जोज़फ़ बाहर के दरवाज़े से वापस आता है)

जोज़फ़—घोड़ा तैयार है, लेफ़्टिनेंट।

लेफ़्टिनेंट—मैं अभी नहीं जाता। जाकर जनरल से कहो कि मैं उनसे बातचीत करना चाहता हूँ।

जोज़फ़—(सिर हिलाते हुए) यह कभी न होगा, लेफ़्टिनेंट।

लेफ़्टिनेंट—क्यों नहीं ?

जोज़फ़—इस दुष्ट संसार में जनरल तो लेफ़्टिनेंट को बुला सकता है, परंतु एक लेफ़्टिनेंट अपने जनरल को नहीं बुला सकता।

लेफ़्टिनेंट—ओह ! तुम्हारा ख़याल है कि वे इसे पसंद नहीं करेंगे। हाँ, शायद तुम्हारी बात ठीक है। जब तक प्रजातंत्र नहीं हुआ था तब तक तो सब एक से न थे पर अब हमें इस बात का ख़ास तौर से ख़याल रखना चाहिए। कि सब समान हैं।

(नेपोलियन बाग़ की ओर से वापस आता है, वह अपने कोट के सीने के बटन लगा रहा है, उसका चेहरा पीला है और उसके विचार मानों उसे काट रहे हैं)

जोज़फ़—(यह न जानते हुए कि नेपोलियन आ गया) बिलकुल ठीक, लेफ़्टिनेंट, बिलकुल ठीक। अब तो सब फ्रांस-निवासी सरायवालों के समान हो गए हैं, क्योंकि उनकी तरह आपको सबके साथ नम्रता दिखानी पड़ती है।

नेपोलियन—(अपना हाथ जोज़फ़ के कंधे पर रखते हुए) और इससे नम्रता का सारा मूल्य घट जाता है, एं ?

लेफ़्टिनेंट—वही आदमी जिसे मैं चाहता था, देखिए, जनरल, मान लीजिए, मैं उसे आपके पास पकड़ लाऊँ !

नेपोलियन—(व्यंग्य-पूर्ण गंभीरता से) मित्र, वह तुम्हें नहीं मिलेगा।

लेफ़्टिनेंट—आहा ! आपका यह ख़याल है, किंतु आप देखेंगे। ज़रा ठहरिए। यदि मैं पकड़ लाऊँ और उसे आपको सौंप दूँ तब तो आप मानेंगे ? तब तो आप मेरी सेना के सामने मेरी तौहीन करने का विचार छोड़ देंगे ? इसलिये नहीं कि इसको मुझे परवा है, आप जानते ही हैं, परंतु

तो भी कोई सेना इस प्रकार दूसरी सेनाओं द्वारा हँसी जाना पसंद नहीं करती।

नेपोलियन—(उसकी उदासी में हँसी की एक मंद रेखा चमक जाती है) इस मनुष्य के साथ क्या किया जाय, जोज़फ़ ? यह जो कुछ कहता है, सब ग़लत है।

जोज़फ़—(तुरंत) इसको जनरल बना दीजिए सरकार, और तब वह जो कुछ कहेगा, वह ठीक ही होगा।

लेफ़्टिनेंट—(चिल्लाकर) हा-हा ! (वह आनंदातिरेक में मज़ाक़ का मज़ा लूटने के लिये पलँग पर गिर पड़ता है)

नेपोलियन—(हँसते हुए और जोज़फ़ का कान खींचते हुए) तुम इस सराय में यों ही सड़ रहे हो, जोज़फ़। (बैठता है और जैसे स्कूल-मास्टर अपने विद्यार्थी को सामने बिठा लेता है उसी प्रकार जोज़फ़ को अपने सामने बिठाता है) मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूँ और तुम्हें मनुष्य बना दूँ ?

जोज़फ़—(अपना सर जल्दी से और बार-बार हिलाते हुए) नहीं, धन्यवाद जनरल। मेरे जीवन-भर लोग मुझे मनुष्य बनाने की फ़िकर में रहे। जब मैं बालक था, तब पादरी साहब मुझे लिखना-पढ़ना सिखाकर मनुष्य बनाना चाहते थे। उसके बाद मालेग्नेनो में एक गवैया मुझे गाना-बजाना सिखाकर मनुष्य बनाना चाहता था। यदि मैं कुछ इंच और ऊँचा होता तो भरतीवाला सारजंट मुझे मनुष्य बना देता। परंतु उन सबकी इच्छा यही थी कि मैं काम करूँ; और ईश्वर को धन्य

वाद है कि मैं बहुत सुस्त हूँ ! इसलिये मैंने खाना पकाने का काम सीखा और भठियारा बन गया। अब मैं काम करने के लिये नौकर रखता हूँ और सिवा बातें करने के, जिसके लिये मैं पूरी तरह योग्य हूँ, मुझे कोई काम नहीं है।

नेपोलियन—(उसकी ओर विचार-पूर्ण दृष्टि से देखते हुए) तुम संतुष्ट हो ?

जोज़फ़—(प्रसन्नता तथा विश्वास के साथ) बिलकुल सरकार।

नेपोलियन—क्या तुम्हारे शरीर में कोई ऐसा सर्वभक्षी राक्षस नहीं है, जिसका पेट तुम्हें अनवरत अध्यवसाय और विश्व-विजय के अनंत परिश्रम से प्रति दिन भरना ही पड़ता हो; जो रात-दिन गले तक ठुसा रहना पसंद करता हो, जो निरंतर तुमसे तुम्हारे मस्तिष्क और शरीर का पसीना कर-रूप में वसूल करता हो; और केवल दस मिनट के आनंद के लिये हफ्तों की अटूट मिहनत लेता हो—जो एक साथ तुम्हारा ग़ुलाम और तुम्हारा स्वामी हो, एक ओर तुम्हारा सुदैव और दूसरी ओर तुम्हारा ही दुर्दैव हो, जो एक हाथ में तुम्हारे लिये राजमुकुट और दूसरे में तुम्हें काले पानी को ले जानेवाली नाव की पतवार लिए रहता हो—और जो अखिल भूमंडल के राज्यों की ओर निर्देश करके तुम्हें उनका सम्राट् बना देने का लोभ दिखाता हो—केवल इस शर्त पर कि तुम उसके नौकर बनो। क्यों भाई, उस विचित्र राक्षस का कुछ भी अंश तुममें नहीं है ?

जोज़फ़—कुछ भी अंश नहीं ! ओह। मैं आपको विश्वास

दिलाता हूँ सरकार। मेरा सर्व-भक्षी राक्षस इससे कहीं अधिक ख़राब है। वह मुझे कोई राजमुकुट और राज्य नहीं देता, वह मुझे बिना कुछ दिए मुझसे हर चीज़ की उम्मेद करता है—शोरबा, अंडे, अंगूर, मलाई, शराब, दिन में तीन बार, सरकार, इससे कम में उसे संतोष हो नहीं होता।

लेफ़्टिनेंट—चलो, रहने दो, जोज़फ़, तुम्हारी बातों से तो भूख लग आई।

(**जोज़फ़, काँपकर मानों क्षमा माँगता हुआ, वार्तालाप छोड़कर हटता है, और खाने की टेबल सजाने में लगता है। वह उसे झाड़ता है, नक़शा सीधा करता है, और नेपोलियन की कुर्सी को जिसे वह स्त्री पीछे हटा गई है, ठीक जगह पर रखता है**)

नेपोलियन—(**लेफ़्टिनेंट की ओर द्वेष-पूर्ण मुसकिराहट के भाव से घूमकर**) आशा है, मैं आपकी महत्त्वाकांक्षा का अनुभव नहीं कर रहा था।

लेफ़्टिनेंट—बिलकुल नहीं; मैं इतना ऊँचा नहीं उड़ता। इसके अलावा मैं जैसा हूँ, वैसा ही अच्छा हूँ। अभी सेना में मेरे समान आदमियों की आवश्यकता है। सच बात यह है कि क्रांति मुल्की शासकों के लिये अच्छी होती है; परंतु सेना में उससे काम नहीं चलेगा। आप जानते हैं, सिपाही कैसे होते हैं, जनरल। वे गृहस्थ अफ़सर पसंद करते हैं। सज्जन ही सबाल्टर्न हो सकता है, क्योंकि उसे मनुष्यों के साथ बहुत अधिक रहना पड़ता है, किंतु जनरल या कर्नल तो

चाहे जो कोई ऐरा-ग़ैरा हो सकता है फिर वह दूकानदारी ही क्यों न अच्छी तरह जानता हो, किंतु लेफ़्टिनेंट को भी सज्जन होना ज़रूरी है। बस और सब तो फिर योंही होते हैं। क्यों, आपके अंदाज़ में लोदी का युद्ध किसने जीता? मैं आपको बताऊँगा, मेरे घोड़े ने।

नेपोलियन—(उठते हुए) आपकी मूर्खता बेहद बढ़ रही है, जनाब। सँभलिए।

लेफ़्टिनेंट—ज़रा भी नहीं। आपको नदी पार की उस सब गोलाबारी की याद होगी। आस्ट्रियन आपको नदी पार होने से रोकने के लिये आप पर आग बरसा रहे थे, और आप उन्हें पुल में आग लगाने से रोकने के लिये उन पर आग बरसा रहे थे। आपने ख़याल किया था उस समय मैं कहाँ था?

नेपोलियन—(धमकी भरी हुई नम्रता से) मुझे अफ़सोस है। उस समय मैं बिलकुल मशग़ूल था।

जोज़फ़—(उत्सुकता-पूर्ण सराहना के साथ) वे कहते हैं कि आप अपने घोड़े से कूद पड़े और बड़ी-बड़ी तोपें अपने हाथ से आपने चलाईं, जनरल।

लेफ़्टिनेंट—यह आपकी ग़लती थी। एक अफ़सर को अपने सिपाही की श्रेणी तक नहीं उतर आना चाहिए। (**नेपोलियन उसकी ओर भयंकरता से देखता है, और इधर-उधर सिंह-गति से घूमता है।**) किंतु यदि हम रिसालेवालों ने नदी में उतार का पता न लगाया होता और बूढ़े ब्यूलो की सेना क

आपके सामने न बढ़ाया होता, तो आप आस्ट्रियनों की ओर गोले बरसाते ही रह जाते। इसलिये मैं कहता हूँ कि जिसने उस उतार का पता लगाया उसी ने लोडी का युद्ध जीता। अच्छा, किसने पता लगाया? सबसे पहले मैंने ही नदी पार की; और मैं जानता हूँ; जिसने पता लगाया, वह मेरा घोड़ा था। (पलंग से उठते हुए विश्वास के साथ) वास्तव में वही घोड़ा आस्ट्रियनों का विजेता है।

नेपोलियन—(उग्रता से) मूर्ख, वे काग़ज़ात खो देने के कारण मैं तुझे गोली से मरवा दूँगा, मैं तुझे तोप के मुँह पर रखकर उड़वा दूँगा, इससे कम दंड का तुझ पर कुछ असर नहीं होगा। (चिल्लाकर) सुनता है? समझता है?

(विना किसी के जाने एक फ़रांसीसी अफ़सर भीतर आता है, वही म्यान-चढ़ी तलवार उसके हाथ में है)

लेफ़्टिनेंट—(निर्लज्जता से) यदि मैं उसे गिरफ़्तार न कर सकूँ तभी तो न जनरल? इस 'यदि' को याद रखिए।

नेपोलियन—यदि! यदि! गधे! गिरफ़्तार किसे करेगा? वह कोई आदमी हो तभी तो।

एक अफ़सर—(एकाएक उन दोनों के बीच में आकर, और उस विचित्र स्त्री के परिचित स्वर में बोलते हुए) लेफ़्टिनेंट, मैं आपका क़ैदी हूँ। (वह उसको अपनी तलवार देती है। वे चकित हो जाते हैं, नेपोलियन वज्राहत के समान उसकी ओर क्षण-भर देखता है; फिर उसकी कलाई पकड़ता है और उसे अपनी ओर खींचता है,

उसे पहचानकर अपनी तसल्ली करने के लिये उसकी ओर और अधिक पास से और तीच्या दृष्टि से देखता है क्योंकि इस समय अँधेरा घना होकर रात हो चली थी, शाम के लाल प्रकाश के स्थान पर तारों का प्रकाश दिखाई दे रहा था)

नेपोलियन—छि ! (वह घृणा के उद्गार से उसका हाथ झटके के साथ छोड़ देता है, और उसकी ओर पीठ फेरता है। उसका हाथ सीने की जेब में है और भौंहें झुकी हुई हैं)

लेफ़्टिनेंट—(तलवार लेते हुए, विजय के साथ) वह कोई आदमी हो तभी तो ! क्यों जनरल, वह आदमी है कि नहीं ?

(उस छद्मवेषिनी स्त्री से) क्यों, मेरा घोड़ा कहाँ है ?

स्त्री—बारघेटो में सुरक्षित है, आपके इंतज़ार में है, लेफ़्टिनेंट।

नेपोलियन—(उनकी ओर घूमकर) काग़ज़ात कहाँ हैं ?

स्त्री—वे ऐसी जगह हैं कि जिसकी आप लोग कभी कल्पना भी नहीं कर सकते ! जिसका आपको खयाल भी नहीं हो सकता। आपमें से किसी को यहाँ मेरी बहन मिली थी ?

लेफ़्टिनेंट—हाँ वह बड़ी अच्छी स्त्री है। आपमें और उसमें आश्चर्यजनक समानता है; किंतु बेशक वह आपसे अधिक सुंदर है।

स्त्री—(गूढ़ता से) अच्छा, आप जानते हैं, वह डाकिनी है ?

जोज़फ़—(भय से उनके पास दौड़ा जाकर और अपने शरीर पर क्रास बनाकर) ओह ! नहीं, नहीं, नहीं। ऐसी चीज़ों के

बारे में मज़ाक़ करना ठीक नहीं। मैं अपने मकान में ऐसा नहीं होने दूँगा, सरकार।

लेफ़्टिनेंट—हाँ, अब यह बातें छोड़ो। जानते हो। तुम मेरे क़ैदी हो, यह सत्य है कि मैं ऐसी वाहियात बातों पर विश्वास नहीं करता; लेकिन तो भी मज़ाक़ के लिये यह उचित समय नहीं है।

स्त्री—किंतु यह मज़ाक़ बिलकुल ही नहीं है। सच कहती हूँ, जनरल पर मेरी बहन ने जादू कर दिया है। (**जोज़फ़ और लेफ़्टिनेंट नेपोलियन से दूर हटते हैं**) जनरल, अपना कोट खोलो, उसके सीने में आपको कागज़ात मिलेंगे। (**वह फुर्ती से अपना हाथ उसके सीने पर रखती है**) हाँ, वहाँ पर हैं, मैंने जान लिया। एँ? (**वह उसके चेहरे की ओर कुछ दुलार से और कुछ चिढ़ाती हुई देखती है**) क्या मुझे इजाज़त है, जनरल? (**वह उसका कोट खोलने के लिये एक बटन पकड़ती है और इजाज़त के लिये रुकती है**)

नेपोलियन—(**अस्पष्ट रीति से**) हिम्मत हो तो।

स्त्री—धन्यवाद। (**वह उसका कोट खोलती है और काग़ज़ात निकालती है**) ये हैं! (**जोज़फ़ को काग़ज़ात दिखाती हुई**) देखो!

जोज़फ़ (**बाहर के दरवाज़े की ओर भागते हुए**) नहीं, ईश्वर के नाम पर! वे जादू-भरे हैं।

स्त्री—(**लेफ़्टिनेंट की ओर घूमकर**) ये हैं, लेफ़्टिनेंट, तुम तो इनसे नहीं डरते हो?

लेफ़्टिनेंट—(**पीछे हटते हुए**) दूर; देखो (**तलवार की मूठ पकड़ते हुए**) दूर रक्खो, मैं कहता हूँ।

स्त्री—(नेपोलियन से) ये कागज़ात आपके हैं, जनरल। इन्हें लीजिए।

जोज़फ़—उन्हें न छुइए, सरकार। उनसे कुछ संबंध न रखिए।

लेफ्टिनेंट—सँभलिए, जनरल, सँभलिए।

जोज़फ़ इन्हें जला दीजिए। और डाकिनी को भी जला दीजिए।

स्त्री—(नेपोलियन से) इन्हें जला दूँ ?

नेपोलियन—(विचार-पूर्वक) हाँ, जला दो। जोनफ़, जाओ, रोशनी लाओ।

जोफ़—(काँपते और हकलाते हुए) क्या आपका मतलब है मैं अकेला अँधेरे में जाऊँ जब कि घर में डाकिनी है ?

नेपोलियन—हश ! तुम कायर हो। (लेफ्टिनेंट से) आप जाने की कृपा कीजिए, लेफ्टिनेंट।

लेफ्टिनेंट—(विरोध करते हुए) ओह ! मैं कहता हूँ जनरल ! मैं नहीं जाऊँगा। देखिए, आप जानते ही हैं कि लोडी के बाद अब तो कोई कह ही नहीं सकता कि मैं कायर हूँ। परंतु इस सब भयंकर बातचीत के बाद मुझसे यह कहना कि अँधेरे में विना कंदील के अकेले जाओ, यह तो ज्यादती है। आप ही से कहा जाय, तो आप पसंद करेंगे ?

नेपोलियन—(उत्तेजित होकर) तुम मेरी आज्ञा मानने से इनकार करते हो ?

लेफ्टिनेंट—(निश्चय के साथ) हाँ, इनकार करता हूँ। वह

उचित नहीं है। पर मैं बताता हूँ कि मैं क्या करूँगा। यदि जोज़फ़ जायगा, तो मैं उसके साथ जाऊँगा और उसकी रक्षा करूँगा।

नेपोलियन—(जोज़फ़ से) सुना ? इससे तुम्हें संतोष होगा जाओ, दोनों।

जोज़फ़—(वह नम्रता से बोलता है। और उसके ओठ काँपते हैं) ख़ुशी से, सरकार। (वह अनिच्छा से भीतर के दरवाज़े की ओर जाता है) ईश्वर रक्षा करे। (लेफ़्टिनेंट से) आपके पीछे, लेफ़्टिनेंट।

लेफ़्टिनेंट—बेहतर है। आगे तुम चलो, मैं रास्ता नहीं जानता।

जोज़फ़—आप भूल नहीं सकते। इसके अलावा (प्रार्थना करते हुए, अपनी बाँह पर हाथ रखते हुए) मैं तो एक ग़रीब भठियारा हूँ; और आप अफ़सर हैं।

लेफ़्टिनेंट—तुम सच कहते हो। लो, तुम्हें इतना नहीं डरना चाहिए। मेरा हाथ पकड़ो। (जोज़फ़ उसका हाथ पकड़ता है) यही रास्ता है। (वे दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़े बाहर जाते हैं। अब तारे चमकने लगे हैं। वह स्त्री टेबल पर पुलंदा फेंक देती है और साड़ी तथा लहँगे से स्वतंत्रता पाने के आनंद का अनुभव करती हुई आराम के साथ पलँग पर बैठ जाती है)

स्त्री—अच्छा जनरल, मैंने आपको हरा दिया।

नेपोलियन—(टहलते हुए) तुम अशिष्टाचार अस्त्रीजनोचित कार्य की अपराधिनी हो। तुम यह पोशाक पहनना उचित समझती हो ?

स्त्री—यह तो मुझको आपकी पोशाक के समान ही मालूम होती है।

नेपोलियन—श्श ! मुझे तुम्हारे लिये शर्म आती है।

स्त्री—(चालाकी से) जी हाँ, सिपाहियों को बड़ी जल्दी शर्म आ जाया करती है ! (वह बड़बड़ाता हुआ लौट जाता है। वह स्त्री कागज़ात को अपने हाथ में थामती हुई उसकी ओर शरारत से देखती है) जलाने के पहले क्या आप इन कागज़ात को पढ़ना नहीं चाहेंगे, जनरल ? आप तो उत्सुकता से मर रहे होंगे। एक निगाह देख लीजिए (वह पुलंदे को टेबल पर फेंक देती है और अपना चेहरा दूसरी तरफ़ कर लेती है) मैं नहीं देखूँगी।

नेपोलियन—महाशया, मुझे ज़रा भी उत्सुकता नहीं है; किंतु आप उसे पढ़ने के लिये तरस रही हैं, इसलिये मैं आपको पढ़ने की इजाज़त देता हूँ।

स्त्री—ओ, मैं तो उन्हें पढ़ चुकी हूँ।

नेपोलियन—(चौंककर) क्या !

स्त्री—उस बेचारे लेफ़्टिनेंट के घोड़े पर सवारी करके चले आने के बाद मैंने पहला काम इन्हें पढ़ने का ही किया, अतएव आपको मालूम हो कि उनमें जो कुछ है, मैं जानती हूँ और आप नहीं जानते।

नेपोलियन—क्षमा कीजिए, दस मिनट पहले जब मैं बाहर बाग़ में गया था, तब मैंने इन्हें पढ़ लिया है।

स्त्री—उफ़ ! (उछलकर) उफ़ ! जनरल, मैं आपको हरा

नहीं सकी। मैं आपकी सराहना करती हूँ। (वह हँसता है और उसके गाल पर थपकी लगाता है) अब मैं आपकी वास्तविक, विना बनावट के सच्ची और हार्दिक पूजा करती हूँ (उसका हाथ चूमती हुई)।

नेपोलियन—(जल्दी से हाथ खींचते हुए) अरे! ऐसा मत करो, अब दूसरा माया-जाल न रचो।

स्त्री—मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूँ, सिर्फ़ आप उसे कुछ-का-कुछ न समझ लें।

नेपोलियन—तो क्या मेरे कारण तुम कहने से रुक जाओगी?

स्त्री—अच्छा, वह यह है,। मैं उस आदमी की पूजा करती हूँ जो नीच और स्वार्थी होने से नहीं डरता।

नेपोलियन—(रोष से) मैं न तो नीच हूँ, न स्वार्थी।

स्त्री—ओ! आप अपने गुणों को नहीं पहचानते। इसके अलावा दरअसल मेरा मतलब नीच और स्वार्थी से नहीं था।

नेपोलियन—धन्यवाद। मैं तो सोचता था कि शायद तुम्हारा यही मतलब था।

स्त्री—हाँ, बेशक है तो यही। किंतु मेरा मतलब यह है कि आपमें एक ख़ास तरह की प्रबल सरलता है।

नेपोलियन—यह उससे भी बढ़कर रही।

स्त्री—आप पत्र पढ़ना नहीं चाहते, किंतु आप इस बात के लिये उत्सुक थे कि उनके अंदर क्या है। इसलिये आप बाग़

में गए और जब आपको कोई नहीं देख रहा था, तब आपने उसे पढ़ा और फिर लौट आए और यह ज़ाहिर किया कि आपने नहीं पढ़ा। मैंने आज तक इतनी नीचता करते हुए किसी मनुष्य को नहीं देखा; परंतु उससे आपका उद्देश्य पूरी तरह सधता है; और इसलिये वैसा करने में आप न तो ज़रा डरे न शर्माए।

नेपोलियन—(एकाएक) तुमने ये गँवारू बातें कहाँ से सीखीं? मैं तो तुम्हें कुलीन स्त्री समझा था। क्या तुम्हारा आजा दूकानदार था?

स्त्री—नहीं, वह अँगरेज़ था।

नेपोलियन—तभी तो अँगरेज़ जाति दूकानदारों की जाति है। अब मैं समझा कि तुमने मुझे क्यों हरा दिया।

स्त्री—मैंने आपको नहीं हराया। और मैं अँगरेज़ नहीं हूँ।

नेपोलियन—हाँ जी, तुम हो, तुम्हारी हड्डी-हड्डी अँगरेज़ है। सुनो, मैं तुम्हें समझाता हूँ कि अँगरेज़ कैसा होता है।

स्त्री—(उत्सुकता से) समझाइए। (विद्वत्ता-पूर्ण भाषण सुनने की आशा के सजीव भाव से वह पलँग पर बैठ जाती है, और उसे ध्यान से सुनने के लिये अपने को सँभालती है। अपने श्रोता को पाकर, नेपोलियन आगे के कार्य के लिये हिम्मत बाँधता है। शुरू करने से पहले ज़रा सोचता है जिससे उस स्त्री को ध्यान स्थिर करने का समय मिले। उसकी आवाज़ धीरे-धीरे बदलती जाती है और अँधेरे में चकित करनेवाली गहराई के साथ सुनाई देती है)—

नेपोलियन—संसार में तीन तरह के आदमी होते हैं, नीची श्रेणी के, मध्यम श्रेणी के और ऊँची श्रेणी के। नीची श्रेणी के आदमी और ऊँची श्रेणी के आदमी एक बात में समान रहते हैं—उनका कोई विचार नहीं रहता, न आचार ही। नीची श्रेणी के लोग आचार में नीचे हैं, ऊँची श्रेणी के लोग उनसे ऊपर हैं। मैं उन दोनों से नहीं डरता; क्योंकि नीची श्रेणीवाले विना ज्ञान के विचार किया करते हैं, जिसके कारण वे मेरी पूजा करते हैं; और ऊँची श्रेणीवाले निरुद्देश्य और लोकाचार-हीन हैं, इसीलिये वे मेरी इच्छा के सामने झुक जाते हैं। सुनो, जैसे हल सारे खेत को खोद डालता है, उसी तरह मैं योरप की सारी जनता और सारे राज-घरानों को खोद सकता हूँ। भयंकर तो मध्यम श्रेणीवाले ही हैं, उनमें ज्ञान और उद्देश्य दोनों हैं। किंतु उनमें भी एक कमज़ोरी है। वे विचारशील हैं। लोकाचार और दिखावट से उनके हाथ-पैर कसे हुए हैं।

स्त्री—तब तो आप अँगरेज़ों को हरा देंगे, क्योंकि सब दूकानदार मध्यम श्रेणी के होते हैं।

नेपोलियन—नहीं, क्योंकि अँगरेज़ों की जाति ही निराली है। कोई भी अँगरेज़ इतना नीचा नहीं है कि उसको विवेक न हो; कोई भी अँगरेज़ उतना ऊँचा नहीं है कि वह विवेक के अत्याचारसे मुक्त हो। किंतु प्रत्येक अँगरेज़ में जन्म से ही एक अलौकिक शक्ति रहती है, जो उसे संसार का मालिक बना देती है। जब वह कोई चीज़ चाहता है, तो वह खुद नहीं कहता कि वह

उसे चाहता है। वह धीरज के साथ इंतज़ार करता है जब तक कि न-जाने कैसे, उसके मन में यह ज्वलंत भावना उत्पन्न नहीं हो जाती कि जिनके पास वह वस्तु है उनको जीतना उसका नैतिक और धार्मिक कर्तव्य है। तब वह अदम्य हो जाता है। वह, एक रईस के समान, जो कुछ उसे अच्छा लगता है, करता है और जो कुछ चाहता है वह पा लेता है। दूकानदार के समान वह उस अध्यवसाय और दृढ़ता के साथ अपने उद्देश्य के पीछे पड़ जाता है जो प्रबल धार्मिक विश्वास और नैतिक दायित्व के गंभीर भाव के कारण प्राप्त हुआ करती है। उसे परिणाम-जनक नैतिक भाव की कमी नहीं रहती। अपने को स्वाधीनता और राष्ट्रीय स्वतंत्रता का महान् समर्थक ज़ाहिर करके वह आधी पृथ्वी को जीतकर अपने राज्य में मिला लेता है और उसका नाम उपनिवेश रखता है। जब वह अपना मेंचेस्टर का घटिया माल बेचने के लिये बाज़ार चाहता है, तब वह किसी देश के निवासियों को ईसा मसीह के शांति-धर्म की शिक्षा देने के लिये मिशनरियों को वहाँ भेजता है। वहाँ के निवासी उस मिशनरी को मार डालते हैं। तब अँगरेज़ ईसाई धर्म की रक्षा के लिये हथियार उठा लेता है, धर्म के लिये लड़ता है, धर्म के लिये देश जीतता है और उसके इनाम में ईश्वर से बाज़ार पाता है। अपने द्वीप के किनारों की रक्षा करने के लिये वह अपने जहाज़ पर ईसाई पुजारी रखता है, जहाज़ के सबसे ऊँचे मस्तूल पर झंडे के साथ क्रास का धार्मिक चिह्न खड़ा

करता है; और जो लोग समुद्र पर उसके आधिपत्य के संबंध में झगड़ा करते हैं उनको डुबाकर, उनके देशों में आग लगाकर और उन्हें समूल नष्ट करके वह सारे संसार में अपने जहाज़ घुमाता है। वह इस बात का गर्व करता है कि कोई भी ग़ुलाम अँगरेज़ों की भूमि पर पैर रखते ही स्वतंत्र हो जाता है; और वह अपनी ग़रीब प्रजा के ६ वर्ष की उम्र के बच्चों को कार-ख़ानों के अंदर कोड़े की मार से ज़बरदस्ती हर रोज़ १६ घंटे के हिसाब से काम करने के लिये बेचता है। वह तरह-तरह के बलवे कराता है और फिर क़ानून और शांति के नाम पर बलवा करनेवालों के विरुद्ध युद्ध छेड़ देता है। संसार में ऐसा कोई भी अच्छा या बुरा काम नहीं है जिसको अँगरेज़ न करता हो, किंतु आपको कोई भी अँगरेज़ कभी ग़लती करता हुआ नहीं मिलेगा। वह प्रत्येक काम किसी सिद्धांत के अनु-सार करता है। वह देश-भक्ति के सिद्धांत के अनुसार तुमसे लड़ता, व्यापार के सिद्धांत के अनुसार तुम्हें लूटता, साम्राज्य के सिद्धांतानुसार तुम्हें ग़ुलाम बनाता और अन्य अनेकों सिद्धांतों के अनुसार तुम पर अत्याचार करता है। वह राजभक्ति के सिद्धांतानुसार अपने राजा का समर्थन करता है और प्रजा-सत्तात्मक सिद्धांतानुसार अपने राजा का सिर भी काट डालता है। उसका सदा का जीवन-मंत्र है कर्तव्य; और वह इस बात को कभी नहीं भूलता कि जो राष्ट्र अपने कर्तव्य को, अपने से ज़रा भी विरुद्ध हो जाने देता है, वह नष्ट हो जाता है। वह—

स्त्री—(ज़रा रुकी हुई आवाज़ से) मैं जानना चाहती हूँ कि इस आधार पर आप मुझे किस प्रकार अँगरेज़ बताते हैं ?

नेपोलियन—(भाषण की शैली छोड़ते हुए) यह साफ़ ज़ाहिर है कि तुम मेरे कुछ पत्र लेना चाहती थीं। तुमने सबेरा उन्हें चुराने में बिताया—हाँ, उन्हें चुराने में, सरे आम लूटकर । तुमने दोपहर का समय उनके संबंध में मेरी इस भूल को सिद्ध करने में बिताया कि वास्तव में मैं तुम्हारे पत्र चुराना चाहता था, और तुमने यह समझाने का प्रयत्न किया कि यह सब मेरी नीचता और स्वार्थ था कि मैं तुमसे ऐसा व्यवहार कर रहा था। और तुम्हारी भलाई तुम्हारी भक्ति और तुम्हारे आत्म-त्याग से हो मैं इस पाप-कर्म से बचा। यही प्रयत्न तो अँगरेज़ियत का चिह्न है।

स्त्री—मुझे विश्वास है कि मैं ज़रा भी अँगरेज़ नहीं हूँ। अँगरेज़ अत्यंत मूर्ख होते हैं।

नेपोलियन—हाँ, इतने मूर्ख कि वे यह भी नहीं जानते कि उनकी हार कब हो गई। परंतु मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ कि तुम्हारा दिमाग़ अँगरेज़ी नहीं है। सुनो, माना कि तुम्हारा आजा अँगरेज़ नहीं था, पर तुम्हारी आजी क्या थी? फ़रांसीसी ?

स्त्री—नहीं। आयरिश।

नेपोलियन—(फुर्ती से) आयरिश ! (विचार-पूर्वक) ओ हो, मैं आयरिश को तो भूल ही गया। आयरिश जनरल के नेतृत्व

में अँगरेज़ी सेना इस इटेलियन जनरल के नेतृत्व में फ़रांसीसी सेना का मुक़ाबला कर सकती है। (वह रुकता है और कुछ मज़ाक़ में, कुछ उदासी से कहता है) ख़ैर, आख़िर को तुमने मुझे हरा दिया; और जो कोई किसी को पहले हराता है वही उसे अंत में भी हरावेगा। (वह सचिंत भाव से चाँदनी में बाग़ के अंदर जाता है और ऊपर की ओर देखता है। वह स्त्री चुपचाप उसके पीछे-पीछे जाती है। वह रात्रि की सुंदरता से मुग्ध होकर और उसकी एकांततासे साहस पाकर नेपोलियन के कंधे पर अपना हाथ रखने की हिम्मत करती है)

स्त्री—(मृदुलता से) आप क्या देख रहे हैं ?

नेपोलियन—(ऊपर दिखाकर) अपना भाग्य-सितारा।

स्त्री—आप इसमें विश्वास करते हैं ?

नेपोलियन—करता हूँ। (वे दोनों तारों की ओर क्षण-भर देखते हैं, वह उसके कंधे पर ज़रा टिकी हुई है)

स्त्री—आप जानते हैं अँगरेज़ों का कहना है कि पुरुष का सितारा स्त्री के फ़ीते के बिना अधूरा है ?

नेपोलियन—(अपमानित होकर, एकाएक उसे अलग करके और कमरे में आते हुए) कपटिन, यदि कहीं फ़रांसीसी लोग ऐसा कहते, तो अँगरेज़ पवित्र भय से कितनी जल्दी अपने हाथ ऊपर उठाते! (वह भीतर के दरवाज़े के पास जाता है और उसे खोलकर पुकारता है) अरे जोज़फ़! वह क़ंदील कहाँ है रे ? (वह टेबल और भंडारिए के बीच में आता है और अपनी

कुर्सी के पास दूसरी कुर्सी सरकाकर रखता है) अभी हमें वह चिट्ठी जलानी है। (वह पुलंदा उठाता है। जोज़फ़ आता है, उसका रंग पीला पड़ गया है और वह अब भी काँप रहा है। उसके एक हाथ में एक शमा है जिसमें दो मोमबत्तियाँ जल रही हैं, और दूसरे हाथ में राख गिरने के लिये चौड़ी तश्तरी है)

जोज़फ़—(टेबल पर शमा रखते हुए करुणाजनक भावसे) सरकार, अभी आप वहाँ बाहर ऊपर की ओर क्या देख रहे थे ?(वह अपने कंधे पर से बाग़ की ओर इशारा करता है, किंतु पीछे देखने से डरता है)

नेपोलियन—(पुलंदा खोलते हुए) उससे तुम्हें क्या ?

जोज़फ़—(हकलाते हुए) क्योंकि वह डाकिन चली गई, ग़ायब हो गई ; और किसी ने उसे जाते नहीं देखा।

स्त्री—(बाग़ में से उसके पीछे आती हुई) हमने बाग़ में देखा कि वह तुम्हारी झाड़ू पर सवारी करके चंद्रमा में चली गई जोज़फ़। अब वह तुम्हें कभी नहीं दीखेगी।

जोज़फ़—ईश्वर को धन्यवाद ! (वह अपने ऊपर क्रास का निशान करता है और जल्दी से बाहर चला जाता है)

नेपोलियन—(चिट्ठियों का ढेर टेबल पर लगाकर) अच्छा लो। बस ? (जिस कुर्सी को उसने अभी रक्खा था उस पर वह टेबल के पास बैठ जाता है)

स्त्री—हाँ, पर आप जानते हैं कि वह पत्र आपकी जेब में है। (वह मुसकिराता है, अपनी जेब से एक पत्र निकालता है और

उसे ढेर पर फेंक देता है। वह उसे उठाती है और उसकी ओर देखती है) सीज़र की पत्नी के संबंध में।

नेपोलियन—सीज़र की पत्नी संदेह से परे है। उसे जला दो।

स्त्री—(तश्तरी उठाकर और उसके साथ-साथ वह पत्र शमा की लौके पास ले जाकर) मुझे आश्चर्य है कि यदि सीज़र की पत्नी यहाँ पर हम दोनों को एक साथ देखे, तो क्या वह संदेह से परे होगी।

नेपोलियन—(टेबल पर कोहनी टेके और हथेलियों पर अपने गाल रक्खे पत्र की ओर देखते हुए और उसके शब्द दुहराते हुए) मुझे आश्चर्य है। (वह विचित्र स्त्री उस तश्तरी में जलता हुआ पत्र रखती है और उसी ढंग से टेबल पर कोहनियाँ रक्खे, हथेलियों पर गाल टेके और उस पत्र का जलना देखती हुई नेपोलियन के पास बैठती है। उसके पत्र जल जाने के बाद वे एकसाथ अपनी आँखें उठाते हैं और एक दूसरे की ओर देखते हैं। परदा धीरे-धीरे गिरता है और उन दोनों को छिपा देता है)

समाप्त

उत्तमोत्तम नाटक

दुर्गावती

इस वीररस-पूर्ण ऐतिहासिक नाटक के लेखक हैं लखनऊ-युनिवर्सिटी के हिंदी-अध्यापक पं० बदरीनाथजी भट्ट बी० ए०। भट्टजी की लेखनी में कैसा चमत्कार है, यह इस नाटक के पढ़ने से ज्ञात हो जायगा। यह मौलिक नाटक बड़ा ही मनोरंजक, विनोदपूर्ण और भावमय है। कहीं वीरता के ओजस्वी वर्णन से आपका रोम-रोम फड़क उठेगा, तो कहीं साहित्यिक विनोद से आप खिलखिला उठेंगे। पुस्तक की छपाई-सफ़ाई बड़ी आकर्षक है। अनेक रंगीन और सादे चित्रों से सुसज्जित का मूल्य १), सुंदर रेशमी जिल्द १।)

बुद्ध-चरित्र

अनुवादक, सुधा-संपादक पं० रूपनारायणजी पांडेय कविरत्न। पांडेयजी ने बँगला-नाटकों का ऐसा भाव-पूर्ण अनुवाद किया है कि बिलकुल मौलिक-से मालूम होते हैं। समाज, भाव, भाषा, शैली सब पर हिंदीपन और स्वाभाविकता की छाप लगी है। राजसी सुख-भोग की लालसाओं को लात मारकर, अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिये संसार के सारे सुखों को तिलांजलि देकर महात्मा बुद्धदेव किस तरह आत्मचिंतन और बैराग्य में लीन हुए हैं, इसका स्पष्ट चित्र देखना हो, तो यह नाटक अवश्य पढ़िए। ऐसा मनोरंजक नाटक शायद ही आपने कभी पढ़ा हो। कई चित्रों से सुसज्जित पुस्तक का मूल्य ।।।), सुंदर रेशमी जिल्द १)

कर्बला

लेखक, हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत प्रेमचंदजी। मौलिक नाटक। हज़रत मुहम्मद के नवासे हज़रतहुसेन की शहादत का करुणाजनक ऐतिहासिक वृत्तांत। मुसलिम-इतिहास की सबसे करुणाजनक हृदय-विदारक, युगांतरकारी और महत्त्वपूर्ण घटना। वीर, भक्त और करुण-रस का अनुपम दृश्य। पढ़ते समय कलेजा हाथों से थाम लेना पड़ता है। हुसेन का अपने समस्त परिवार को और अपने प्राण को भी इस्लाम की मर्यादा पर बलिदान कर देना, कर्बला के निर्जन मैदान में प्यास से तड़प-तड़पकर मरना दिल हिलादेनेवाला दृश्य है। इस घटना को इस्लामी इतिहास का महा-भारत समझना चाहिए। उसी वीरात्मा के शोक में आज तक समस्त इस्लामी संसार में दस दिन तक मुहर्रम मनाया जाता है। मूल्य सादी १।), सुनहरी रेशमी जिल्द २)

पूर्व भारत

लेखक, पं० श्यामविहारी मिश्र एम्०ए० और पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी०ए०। महाभारत के कथानक को लेकर इसकी रचना हुई है। उत्तरा के विवाह तक की कथा इसमें आ गई है। विद्वान् लेखक-द्वय ने नाटक के मुख्य पात्रों के चरित्रों को उज्ज्वल बनाने में बड़ा प्रयास किया है। मानव-प्रकृति के विश्लेषण में जो निपुणता प्रकट की है, उससे भिन्न स्वभाववाले पात्रों के चरित्र एक दूसरे की रगड़ से स्पष्ट हो उठे हैं। यह पुस्तक कवित्त्व से कमनीय, नाटकत्त्व से निर्मल, सद्भावों से सुंदर और मौलिकता से मंडित है। काग़ज़ बढ़िया लगा है। छपाई बहुत ही सुंदर हुई है। मूल्य सादी ॥।=), सजिल्द १।=)